Discover your divinity with us
A/C Showroom
ज्ञान गंगा ॐ मूर्ति माला केन्द्र
उजाला भवन स्टेशन रोड, दुर्ग
0788-4030383, 3293199
भगवान के वस्त्र, श्रृंगार मूर्तियां एवं समस्त पूजन सामग्री संगमरमर व पीतल की मूर्तियां राशि रत्न एवं उपरत्न उपलब्ध

राष्ट्र एवं राज्य के प्रगति पथ पर...

रायपुर एवं दुर्ग से प्रकाशित

समय दर्शन

ESTD : Since 2011

संस्थापक : स्व. श्रीमती निलिमा खड़तकर

निष्पक्ष निर्भीक खबरों के साथ

श्री
दुर्ग शहर में सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य
माँ दुर्गा उपासक मां बगुलामुखी, माँ कामख्या, माँ भद्रकाली, माँ शतचंडी की असीम कृपा साधना द्वारा समस्त समस्याओं का मार्ग दर्शन हेतु
पं. एम.पी. शर्मा/
मो. 8109922001
फीस 251/- मात्र
पताः- श्री दुर्गा ज्योतिष कार्यालय सिकोला भाठा, सब्जी मार्केट के सामने, धमधा नाका, दुर्ग

वर्ष 06, अंक 268 पृष्ठ 8, मूल्य 3.00 रूपये रायपुर, बुधवार 13 नवम्बर 2024 www.samaydarshan.in

संक्षिप्त समाचार

करणी सेना का ऐलान : अनमोल बिश्नोई पर एक करोड़, तो गोल्डी बरार को मारने पर 51 लाख रुपये

अहमदाबाद। राष्ट्रवादी कांग्रेस नेता बाबा सिद्दीकी की हत्या के बाद लॉरेंस बिश्नोई पर नकद पुरस्कार की घोषणा करने वाले करणी सेना के अध्यक्ष राज शेखावत ने एक बार फिर बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि वह लॉरेंस के खिलाफ घोषित की गई नकद पुरस्कार राशि देने के फैसले पर आज भी अडिग हैं। राज शेखावत ने अपने एक्स अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया है। उन्होंने कहा है, अतंकवादी अनमोल बिश्नोई, गोल्डी बरार, रोहित गोदारा, संपत नेहरा और वीरेंद्र चारण पर नकद पुरस्कार की घोषणा। आतंकी लॉरेंस की पुरस्कार राशि पर हम आज भी कायम है और आगे भी कायम रहेंगे। अब बारी गैंग की आतंकी गतिविधियों को अंजाम देने वाले आतंकवादी अनमोल बिश्नोई, गोल्डी बरार, रोहित गोदारा, संपत नेहरा और वीरेंद्र चारण की। इन आतंकवादियों पर भी नकद पुरस्कार की घोषणा क्षत्रिय करणी सेना द्वारा की जाती है। जो कोई व्यक्ति इनको ठोकेगा उसे नियमानुसार नकद राशि से पुरस्कृत किया जाएगा।

बिहार-यूपी सीमा पर ट्रेन डिरेल करने की बड़ी साजिश नाकाम, ट्रैक कटा हुआ मिला

नई दिल्ली। बिहार-उत्तर प्रदेश सीमा पर एक बार फिर ट्रेन पटरी से उतारने की साजिश नाकाम कर दी गई है। इस घटना में रेलवे ट्रैक को जानबूझकर काटा गया था। सूचना के अनुसार, कोलकाता-गाजीपुर सिटी शब्दभेदी एक्सप्रेस को निशाना बनाने की कोशिश की थी, लेकिन लोको पायलट की सतर्कता से बड़ा हादसा टल गया। रेलवे अधिकारी मौके पर पहुंच गए हैं और इस मार्ग पर ट्रेन सेवाएं फिलहाल बाधित हैं। रेलवे ट्रैक कटे होने की सूचना मिलते ही जीआरपी और पुलिस प्रशासन के अधिकारी तुरंत मौके पर पहुंचे। यह ट्रेन कोलकाता के हावड़ा स्टेशन से शाम 10ः45 बजे चलती है और गाजीपुर सिटी स्टेशन पर दोपहर 12ः25 बजे पहुंचती है। हाल ही में उत्तराखंड में भी इस तरह की घटना हुई थी, जहां बिलासपुर रोड रुद्रपुर सिटी स्टेशन के पास रेलवे ट्रैक पर एक लोहे का खंभा रखा गया था।

भाजपा राजनीतिक भ्रष्टाचार की बात न करे, वह दुनिया की सबसे अमीर पार्टी

कोलकाता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी की सरकार वाले राज्य शाही परिवार के लिए एटीएम बन गए हैं, महाराष्ट्र में ऐसा नहीं होने दिया जाएगा। इस पर माकपा नेता मोहम्मद सलीम ने उनकी निंदा की है। मोहम्मद सलीम ने कहा, अगर कोई भी पार्टी राजनीतिक भ्रष्टाचार या शाही परिवारों की बात करती है, तो मुझे लगता है कि भारतीय जनता पार्टी को इस मामले से थोड़ी दूरी बनाए रखनी चाहिए थी। और संघ परिवार को भी। आज भाजपा दुनिया में सबसे अमीर पार्टी है।

---

43 सीटों पर डाले जाएंगे वोट

झारखंड में पहले चरण का मतदान होगा आज

रांची/ एजेंसी

बुधवार, 13 नवंबर को दो चरण के झारखंड विधानसभा चुनाव के पहले चरण में मतदान के लिए मंच तैयार है, जब 15 जिलों के 43 विधानसभा क्षेत्रों में मतदाता मतदान के लिए जाएंगे। मैदान में 683 उम्मीदवारों की किस्मत दांव पर होगी क्योंकि मतदाता इनमें से प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र में अपने नए विधायक चुनेंगे। 43 निर्वाचन क्षेत्रों में 17 सामान्य सीटें, 20 अनुसूचित जनजाति के लिए और छह अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित हैं। जिन प्रमुख नामों की किस्मत अधर में लटकी हुई है उनमें पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन, स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता, राज्यसभा सांसद महुआ माजी, पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा की पत्नी गीता कोड़ा और पूर्व मुख्यमंत्री रघुबर दास की बहू पूर्णिमा दास शामिल हैं। पहले चरण के चुनाव के लिए प्रचार सोमवार को थम गया। बुधवार को जिन निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान हो रहा है, उनमें पूर्वी सिंहभूम जिले में सबसे अधिक 6 सीटें हैं, इसके बाद पलामू, पश्चिमी सिंहभूम और रांची जिलों में 5-5 सीटें हैं, जबकि कोडरमा और रामगढ़ जिलों में 1-1 सीट है। पहले चरण में सरायकेला, रांची, जमशेदपुर पश्चिम, जगन्नाथपुर और जमशेदपुर पूर्व शामिल हैं। पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन सरायकेला सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। वह झारखंड चुनाव से पहले अगस्त में भाजपा में शामिल हुए थे। जमशेदपुर पश्चिम में स्वास्थ्य मंत्री और कांग्रेस उम्मीदवार बन्ना गुप्ता का मुकाबला जदयू नेता सरयू राय से है, जिन्होंने 2019 के चुनाव में तत्कालीन

मुख्यमंत्री रघुबर दास को हराया था। जमशेदपुर पूर्व में कांग्रेस उम्मीदवार अजॉय कुमार का मुकाबला पूर्व मुख्यमंत्री रघुबर दास की बहू और भाजपा की पूर्णिमा दास से होगा। इस बीच, पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा की पत्नी और भाजपा उम्मीदवार गीता कोड़ा, जगन्नाथपुर में कांग्रेस के सोना राम सिंकू के खिलाफचुनाव लड़ रही हैं। रांची सीट पर लंबे समय से बीजेपी विधायक रहे सीपी सिंह का मुकाबला झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) नेता और मौजूदा राज्यसभा सांसद महुआ माजी से है। राज्य भर में स्थापित 15,344 मतदान केंद्रों पर व्यापक व्यवस्था के बीच 43 निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान सुबह 7 बजे शुरू होगा। झारखंड में प्राथमिक मुकाबला झामुमो के नेतृत्व वाले महागठबंधन (महागठबंधन) और भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए के बीच है। पहले चरण की 43 सीटों में से झामुमो 23, कांग्रेस 17 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। जबकि लालू प्रसाद यादव की राजद ने पांच सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे हैं, इनमें से दो उम्मीदवार गठबंधन के सदस्यों के खिलाफ मैदान में हैं। एनडीए के भीतर, भाजपा 36 सीटों पर चुनाव लड़ रही है, जबकि सुदेश महतो की आजसू ने 4 सीटों पर, नीतीश कुमार की जेडीयू ने 2 सीटों पर और चिराग पासवान की एलजेपी (आर) ने 1 सीट पर उम्मीदवार उतारे हैं।

छत्तीसगढ़ रायपुर दक्षिण विधानसभा में आज मतदान, बनाए गए 366 पोलिंग बूथ

छत्तीसगढ़ के रायपुर दक्षिण विधानसभा में उपचुनाव 13 नवंबर को होना है। इसके लिए 253 मुख्य मतदान केंद्र और 13 सहायक मतदान केंद्र बनाए गए हैं। इन सभी मतदान केन्द्रों में उप-निर्वाचन के लिए सुबह सात बजे से शाम छह बजे तक वोट डाले जाएंगे। विधानसभा क्षेत्र में 2.71 लाख से अधिक मतदाता अपने मताधिकार का उपयोग करेंगे। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी रीना बाबासाहेब कंगाले ने रायपुर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र के सभी मतदाताओं से मतदान केंद्र पहुंचकर मतदान करने की अपील की है। 13 नवंबर को सुबह सात बजे से शाम छह बजे तक वोट डाले जाएंगे। इसके लिए निर्वाचन क्षेत्र में 253 मुख्य मतदान केंद्र और 13 सहायक मतदान केंद्र बनाए गए हैं। उप-निर्वाचन में क्षेत्र के कुल दो लाख 71 हजार 169 मतदाता अपने मताधिकार का इस्तेमाल करेंगे। इनमें एक लाख 33 हजार 800 पुरूष मतदाता, एक लाख 37 हजार 317 महिला मतदाता और 52 तृतीय लिंग मतदाता शामिल हैं।

कांग्रेस ने जारी किया घोषणा पत्र

250 यूनिट मुफ्त बिजली जातीय गणना का वादा...

रांची। कांग्रेस ने मंगलवार को झारखंड में अपना चुनावी घोषणापत्र घोषित कर दिया। पार्टी ने राज्य में 250 यूनिट मुफ्त बिजली और जाति आधारित सर्वेक्षण का वादा किया है। पार्टी घोषणापत्र समिति के अध्यक्ष बंधु तिर्की द्वारा अनावरण किया गया घोषणापत्र, 1932 खतियान-आधारित अधिवास नीति और आदिवासियों के सरना धार्मिक कोड के कार्यान्वयन सहित सात वादों पर केंद्रित है। राज्य की कुल 81 सीटों में से 43 सीटों के लिए पहले चरण के मतदान से एक दिन पहले घोषणापत्र जारी किया गया बंधु तिर्की ने कहा कि घोषणापत्र में गरीबों को वर्तमान में 200 यूनिट के

मुकाबले 250 यूनिट तक मुफ्त बिजली देने का वादा किया गया है। हम एक साल में सभी खाली सरकारी पदों को भर देंगे। उन्होंने कहा कि झारखंड में आदिवासियों के हितों को ध्यान में रखते हुए मेनिफेस्टो कमेटी ने हर जिले में चौपाल लगाई।

अमित शाह का कांग्रेस पर वार

जब तक बीजेपी का एक भी विधायक है हम मुसलमानों को आरक्षण नहीं देने देंगे..

रांची/ एजेंसी

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने झारखंड में झामुमो नीत गठबंधन पर कथित भ्रष्टाचार और कोयला तस्करी का आरोप लगाया। साथ ही भ्रष्ट नेताओं को सबक सिखाने के लिए मतदाताओं से भाजपा के हाथ मजबूत करने का आग्रह किया। उन्होंने यह भी एलान किया कि भाजपा राज्य में हर घुसपैठिए की पहचान करेगी और उन्हें यहां से बाहर निकालेगी। इसके अलावा, कांग्रेस को आरक्षण विरोधी पार्टी भी बताया। बता दें, अमित शाह झारखंड के झरिया विधानसभा क्षेत्र में मंगलवार को जनसभा को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा, 'आज हमारे देश के महान नेता मदन मोहन मालवीय जी की पुण्यतिथि है। मालवीय जी ने स्वतंत्रता आंदोलन में बहुत बड़ा योगदान दिया और साथ ही बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना भी की। मैं आज मालवीय जी को प्रणाम करके आप सबकी ओर से श्रद्धांजलि देता हूं।' उन्होंने कहा कि कांग्रेस आरक्षण विरोधी पार्टी है। ये देश के पिछड़ों, दलितों का आरक्षण समाप्त करके मुसलमानों को देना चाहते हैं। आप चिंता मत कीजिये, जब तक मोदी की सरकार है तब तक ऐसा नहीं होने देंगे। उन्होंने कहा, 'आने वाली 20 तारीख को

आप सभी को वोट देना है। आपका एक एक वोट झारखंड का भविष्य तय करने वाला है। आपका एक वोट तय करेगा कि खुद को करोड़पति-अरबपति बनाने वाला झामुमो चाहिए, या गरीब माताओं को लखपति दीदी बनाने वाली नरेंद्र मोदी की सरकार आपको चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि यहां कांग्रेस और झामुमो के नेताओं से करोडों रुपये पकड़े गए हैं, ये सारे पैसे झरिया और धनबाद के युवाओं और माताओं-बहनों के हैं। आप भाजपा की सरकार बना दीजिए, हम इन करोड़ों रुपये लूटने वालों को उल्टा लटकाकर सीधा करने का काम करेंगे। झारखंड के गरीब आदिवासियों का, पिछड़ा वर्ग का और युवाओं का जो रुपया उन्होंने लुटा है, उसकी पाई-पाई उनसे वसूल करके झारखंड की तिजोरी में जमा की जाएगी।

राहुल गांधी ने भाजपा से पूछा

संविधान को खत्म करने चौबीसों घंटे काम कर रहे भाजपा-राहुल..

गोंदिया/ एजेंसी

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने एक बार फिर संविधान के मुद्दे को लेकर भाजपा और प्रधानमंत्री पर हमला बोला। उन्होंने भाजपा से सवाल पूछा कि क्या संविधान में लिखा है कि सरकार को गिराने के लिए विधायकों को खरीदना चाहिए महाराष्ट्र के गोंदिया में एक जनसभा को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने कहा कि मैं गारंटी दे सकता हूं कि पीएम मोदी ने कभी भी भारत के संविधान को नहीं पढ़ा है। अगर उन्होंने इसे पढ़ा होता तो वे इसका सम्मान करते। हाथ में संविधान पकड़कर दिखाते

हुए राहुल गांधी ने कहा कि अगर देश में लोकतंत्र बचा है तो इस किताब की वजह से। इस किताब को तैयार करने में डॉ. बीआर आंबेडकर, महात्मा गांधी की बड़ी भूमिका रही। जबकि नरेंद्र मोदी और आरएसएस 24 घंटे किताब पर हमला करते रहते हैं। उन्होंने कहा कि क्या इस संविधान में लिखा है कि महाराष्ट्र सरकार को गिराने के लिए किसी को भी विधायकों को खरीदना चाहिए? सोमवार को भाजपा ने संविधान को लेकर दिए जा रहे भाषण को लेकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी की चुनाव आयोग से शिकायत की थी। भाजपा ने कहा था कि राहुल गांधी लगातार संविधान को लेकर भाजपा पर झूठे आरोप लगा रहे हैं। उन्होंने संविधान की धज्जियां उड़ाईं और झूठ बोला कि भाजपा संविधान को नष्ट करने वाली है। राहुल गांधी ऐसा करने के आदी हैं और चेतावनी और नोटिस के बाद भी वे ऐसा करने से बाज नहीं आ रहे हैं।

किसी लड़के के साथ होटल जाने का अर्थ ये नहीं कि महिला यौन संबंध के लिए तैयार है

मुंबई। बॉम्बे हाईकोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसले में कहा है कि किसी महिला का किसी पुरुष के साथ होटल के कमरे में जाना यह नहीं दर्शाता कि उसने यौन संबंध के लिए सहमति दे दी है। गोवा बेंच ने एक बलात्कार मामले में ट्रायल कोर्ट के फैसले को रद्द करते हुए यह फैसला सुनाया है। ट्रायल कोर्ट ने आरोपी को बरी करते हुए तर्क दिया था कि महिला स्वेच्छा से कमरे में गई थी, इसलिए उसने यौन संबंध के लिए सहमति दे दी थी। मार्च 2020 में, आरोपी गुलशेर अहमद ने पीड़िता को विदेश में नौकरी देने का झांसा देकर होटल के कमरे में बुलाया था। दोनों ने मिलकर ही कमरा बुक किया था।

रविशंकर प्रसाद बोले-एकता से इन्हें परेशानी

देश को तोड़ने वाली ताकतों का खुला समर्थन लेते हैं कांग्रेस.......

नई दिल्ली/ एजेंसी

भाजपा मुस्लिम तुष्टिकरण को लेकर इंडिया गठबंधन और कांग्रेस पर जबरदस्त तरीके से हमलावर है। भाजपा सांसद रविशंकर प्रसाद ने आरोप लगाया कि कांग्रेस और उनके ढ्ढह्य्ढ्ढ गठबंधन के सारे सहयोगी मुस्लिम तुष्टिकरण और उनके वोट लेने के लिए एजेंडा चलवा रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि जमीयत ए उलेमा जिला लोहरदगा, छोटा नागपुर ने फरमान जारी किया है कि मौजूदा मुल्क के हालात को देखते हुए मरकजी हुकूमत का मुसलमानों के ताल्लुक में जो रवैया है और जिस प्रकार

मुसलमानों को ह्रश्च्, ष्टष्ट और वक्फ कानून लेकर घुसपैठिये के बहाने डराया धमकाया जा रहा है, उस सिलसिले में जमीयत ए उलेमा, झारखंड से मशवरे के बाद जमीयत ए उलेमा जिला लोहरदगा मूसलमानों से अपील करती है कि मुसलमान एक होकर इंडी गठबंधन के पक्ष में अपना वोट दें। भाजपा नेता ने कहा कि ये झारखंड और महाराष्ट्र की कहानी है। उन्होंने कहा कि ये सारी जमात वही है, जिसने तीन तलाक का भी विरोध किया था। इतने सालों के बाद आज भी कांग्रेस पार्टी न कुछ समझती है और न सुधरती है, बल्कि ऐसे तत्वों के बहाने ही चुनाव जीतने का षड्यंत्र करती है। प्रसाद ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री कहते हैं कि एक रहोगे तो सेफ रहोगे। कांग्रेस इस पर कटाक्ष करती है। चुनाव आयोग में जाती है। एकता से इन्हें परेशानी है, लेकिन देश को तोड़ने वाली ताकतों का खुला समर्थन लेते हैं। यही कांग्रेस और इंडिया गठबंधन की सच्चाई है।

कांग्रेस की सोच ने किसानों को किया बदहाल

महाराष्ट्र को महायुति की स्थिर सरकार की जरूरत-पीएम मोदी

नई दिल्ली/ एजेंसी

महाराष्ट्र के सोलापुर में जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विपक्ष पर जमकर निशाना साधा। मोदी ने कहा कि महाराष्ट्र को महायुति की स्थिर सरकार की जरूरत है जिसका एकमात्र उद्देश्य राज्य का विकास है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि आपको याद रखना चाहिए कि जिस वाहन पर एमवीए के लोग यात्रा कर रहे हैं वह सबसे अस्थिर है। वे आपस में लड़कर अपना समय बर्बाद करते हैं। उन्होंने कहा कि जब महाराष्ट्र की आस्था और संस्कृति में विश्वास करने वाली महायुति की सरकार काम करती है, तो कैसे कैसे परिणाम आते हैं, सोलापुर के लोगों ने ये देखा है। सोलापुर के लोग जिस विकास की मांग दशकों से कर रहे थे, जो प्रोजेक्ट्स दशकों से लटके थे, महायुति सरकार ने उन्हें पूरा करके दिखाया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि देश-विदेश से आने वाले लोगों को यहां हुए विकास कार्यों से बेहतर कनेक्टिविटी मिलेगी। हमारे सोलापुर में पालकी यात्रा की बहुत प्राचीन परंपरा है, पहले यात्रियों को बहुत परेशानी होती थी। पालकी महामार्ग का निर्माण करवाकर इस परेशानी को हल करने का सौभाग्य भी हमें ही मिला है। उन्होंने कहा कि ये बदलाव केंद्र की भाजपा और महाराष्ट्र की महायुति सरकार के कामों से संभव हुआ है। आज हम विकसित महाराष्ट्र से विकसित भारत के निर्माण की ओर बढ़ रहे हैं। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि महाराष्ट्र को अगले 5 साल तक महायुति की ऐसी सरकार की जरूरत है,

जो स्थिर हो, जिसका एकमात्र लक्ष्य महाराष्ट्र का विकास हो। स्थिर सरकार ही महाराष्ट्र के लिए दूरगामी नीतियां बना पाएगी। मोदी ने कहा कि आप सब देख रहे हैं कि अघाड़ी में कैसे भगदड़ मची हुई है। अभी से अघाड़ी में मुख्यमंत्री पद के लिए खींचतान, नूराकुश्ती चल रही है। एक पार्टी पूरे दिन अपने नेता को मुख्यमंत्री बताने में लगी रहती है। दूसरी पार्टी और कांग्रेस वाले उनकी दावेदारी खारिज करने में लगे रहते हैं। उन्होंने तंज भरे लहजे में कहा कि चुनाव से पहले जिनका ये हाल है, वो अघाड़ी वाले महाराष्ट्र को कभी भी स्थिर सरकार नहीं दे सकते। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने दशकों तक देश पर राज किया है। लेकिन उनकी सोच थी - समस्याओं को बनाए रखना, लोगों को समस्याओं में उलझाए रखना। कांग्रेस की इसी सोच ने महाराष्ट्र के किसानों को बदहाल बनाए रखा। नरेंद्र मोदी ने कहा कि हमारी सरकार देश में गन्ना किसानों के लिए काम कर रही है। इथेनॉल इकोनॉमी के जरिए हम गन्ना किसानों के लिए कमाई के नए रास्ते बना रहे हैं। क्या मोदी के पीएम बनने के बाद आई इथेनॉल तकनीक? नहीं, यह पहले भी था लेकिन पिछली सरकार ने इस पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कहा कि आज पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण बढ़कर 15त्न हो गया। लक्ष्य 20त्न के लक्ष्य तक पहुंचने का है।

पिछले 10 वर्षों में हमने इथेनॉल खरीद के माध्यम से गन्ना किसानों को 80,000 करोड़ रुपये दिए हैं। मोदी ने कहा कि इस इलाके में सिंचाई के लिए कांग्रेस और उसके सहयोगियों ने आप लोगों को बहुत तरसाया है। हमने यहां किसानों की सिंचाई की समस्या को दूर करने पर फोकस किया। हमारे प्रयासों से सोलापुर जिले के कई गांवों का जलस्तर बढ़ रहा है। महायुति सरकार ने किसानों के बिजली के बिल माफकर दिए। हमारी कोशिश है कि अब किसानों को बिजली का बिल भरना ही न पड़े। इसलिए हम हर खेत तक सोलर ऊर्जा पहुंचाने में जुटे हैं। उन्होंने कहा कि हम महिलाओं को जन-कल्याण की सभी योजनाओं के केंद्र में रखकर काम कर रहे हैं। आज पीएम आवास योजना के तहत बनने वाले घर महिलाओं के नाम पर बन रहे हैं। मुद्रा योजना की सबसे बड़ी लाभार्थी हमारी माताएं-बहनें हैं। हम 3 करोड़ बहनों को लखपति दीदी बनाने के मिशन में जुटे हैं।

संक्षिप्त समाचार

खनिज एवं राजस्व विभाग की संयुक्त कारवाई

महासमुंद (समय दर्शन)। कलेक्टर विनय लंगेह के निर्देशानुसार खनिज विभाग एवं राजस्व विभाग द्वारा अवैध रेत उत्खनन पर सख्ती से नियंत्रण किये जाने हेतु आज खनिज एवं राजस्व टीम द्वारा ग्राम मोहकम स्थित महानदी से अवैध रेत उत्खनन करने वालों पर सख्ती से कार्यवाही करते हुए अवैध रेत उत्खनन में संलिप्त 01 नग चैन माउंटेन मशीन को जप्त किया गया। चैन माउंटेन मशीन को अवैध उत्खनन कर्ताओं द्वारा झाड़ियों में छुपाया गए था जिसे रात्रि में निशान के आधार पर ढूंढा गया। लावारिश हालत में ग्रामीणों के समक्ष जप्त किया गया। रेत के अवैध उत्खनन को बंद कराने खनिज विभाग ने जोबा मार्ग में भारी वाहनों को नदी क्षेत्र में घुसने से रोकने स्टॉपर लगाया गया है साथ ही संबंधी पंचायतों में सरपंचों को पत्र जारी कर अवैध उत्खनन परिवहन में ग्रामीणों को सहयोग न करने तथा इस संबंध में मुनादी कराने निर्देशित किया गया है। उपरोक्त कार्यवाही मे राजस्व विभाग से नायब तहसीलदार टेकेंद्र नूरेटी, नायब तहसीलदार मोहित अमिला ,सहायक खनिज अधिकारी देवेंद्र साहू एवं सिपाही प्रशांत कालू, मनीष डीडी, मनोज निर्मलकर मौजूद थे।

रोहिना में सांसद करेंगे धान खरीदी का शुभारम्भ एवं कार्यालय भवन का लोकार्पण

सरायपाली (समय दर्शन)। प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति रोहिना पं. क्र. 885 में नवनिर्मित कार्यालय सह गोदाम का लोकार्पण एवं समर्थन मूल्य पर धान खरीदी का शुभारंभ 14 नवंबर को प्रातः 10 बजे महासमुंद लोकसभा सांसद श्रीमती रूपकुमारी चौधरी, राज्य महिला आयोग सदस्य एवं प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष श्रीमती सरला कोसरिया, जिला भाजपा अध्यक्ष संजय शर्मा, भंवरपुर मंडल अध्यक्ष विद्या चौधरी, ग्राम पंचायत रोहिना सरपंच श्रीमती जड्डासिनी चूड़ामणि साहू, भंवरपुर कोऑपरेटिव बैंक शाखा प्रबंधक एवं प्राधिकृत अधिकारी छालो विशाल एवं पंचगणों की उपस्थिति में संपन्न होगा। प्राधिकृत अधिकारी छालो विशाल एवं समिति प्रबंधक सीताराम चौधरी ने धान खरीदी के शुभारंभ अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में कृषकों को उपस्थित होने की अपील की है।

धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान की शुरूआत 15 नवम्बर को

ब्यूरों सैय्यदा मुनीजा़ हुसैनी धमतरी छत्तीसगढ़। धमतरी/ देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा बीते दो अक्टूबर को ''धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान'' का शुभारंभ किया गया। जिले में यह कार्यक्रम आगामी 15 नवम्बर से शुरू होगा। इस अभियान का उद्देश्य जनजातीय बाहुल्य ग्रामों तथा जनजातीय परिवारों के लिए विभिन्न योजनाओं पक्का घर, सड़क, बिजली, पानी, स्वास्थ्य की सुविधाओं का विस्तार आदि में सेच्युरेशन कर जनजातीय समुदायों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति में सुधार लाकर जनजातीय ग्रामों का समग्र विकास करना है। उल्लेखनीय है कि इस अभियान में जिलें के ऐसे अनूसूचित जनजाति ग्राम शामिल है, जहां अनूसूचित जनजाति की जनसंख्या 500 से अधिक अथवा 50 प्रतिशत अनूसूचित जनजाति बाहुल्य है। जिले के चयनित अनूसूचित जनजाति के चारों विकासखंड अंतर्गत 97 ग्राम पंचायतों के 108 अनूसूचित जनजाति बाहुल्य ग्रामों के 17 हजार 282 परिवारों के 76 हजार 560 जनसंख्या शामिल है। यह अभियान 05 वर्षों के लिए होगा, इसमें 17 मंत्रालयों द्वारा क्रियान्वित किये जाने वाले 25 विभाग शामिल हैं। जिसमें ग्रामीण विकास, जल शक्ति, विद्युत, नवीनकरणीय ऊर्जा, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस, महिला और बाल विकास, शिक्षा, आयुष, दूरसंचार, कौशल विकास और उद्यमिता, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि और किसान कल्याण, मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी, पंचायती राज पर्यटन और संस्कृति तथा जनजातिय मंत्रालय शामिल है।

वनरक्षक के 1484 पदों पर भर्ती हेतु शारीरिक मापजोख एवं दक्षता परीक्षण 16 नवम्बर से

ब्यूरों सैय्यदा मुनीजा़ हुसैनी धमतरी छत्तीसगढ़। धमतरी/ वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग में वनरक्षक के 1484 पदों पर सीधी भर्ती हेतु वर्ष 2023-24 में आवेदन पत्र आमंत्रित किया गया था। राज्य में कुल 17 नोडल वनमण्डलों (रायपुर, महासमुंद धमतरी, बालोद, राजनांदगांव, कवर्धा, बिलासपुर, कोरबा, रायगढ़, सरगुजा, जशपुर, कोरिया, कांकेर, कोण्डागांव, जगदलपुर, दंतेवाड़ा एवं बीजापुर) में 16 नवम्बर 2024 से शारीरिक मापजोख एवं दक्षता परीक्षण प्रारंभ होगा। शारीरिक मापजोख एवं दक्षता परीक्षण हेतु पात्र अभ्यर्थियों की सूची वनमण्डलवार, नोडलवार एवं अनुक्रमांकवार विवरण विभागीय वेबसाईट 222.द्धश्रहद्भद्मह्ल.ष्द्द.द्दश1.द्बट्ट पर उपलब्ध है।

खरीफ विपणन वर्ष 2024-24 मे कृषकों से समर्थन मूल्य मे धान खरीदी हेतु तैयारी पूरी

130 समितियों के माध्यम से 182 उपार्जन केंद्रों में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी की जाएगी

खरीफविपणन वर्ष 2024-25 में शासन द्वारा 12,45,963 मीट्रिक टन अनुमानित धान उपार्जन का लक्ष्य

महासमुन्द (समय दर्शन)। राज्य शासन द्वारा समर्थन मूल्य पर धान खरीदी 14 नवम्बर से प्रारम्भ किया जाएगा। जिले मे कलेक्टर विनय लंगेह के मार्गदर्शन मे धान खरीदी की सभी तैयारी पूर्ण कर लिया गया है। खाद्य अधिकारी श्री अजय यादव ने बताया कि जिले में 130 समिति के माध्यम से 182 उपार्जन केंद्रों में धान खरीदी की जाएगी। उन्होंने बताया कि खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 में शासन द्वारा निर्धारित अनुमानित खरीदी 9,96,248 मीट्रिक टन के विरुद्ध 11,28,540 मीट्रिक टन की खरीदी की गई थी। इस वर्ष खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में शासन द्वारा 12,45,963 मे.टन अनुमानित धान उपार्जन का लक्ष्य प्रदान किया गया ।

धान खरीदी हेतु 6 विशेष जांच दल का गठन तहसीलवार किया गया है। जिसमे (तहसीलदार, खाद्य निरीक्षक, मंडी निरीक्षक, सहकारिता निरीक्षक होंगे) इसी तरह 16 चेक पोस्ट अंतर्राज्यीय एवं अतिरिक्त पुलिस 05, वन जांच चौकी 02 के माध्यम से भी निगरानी किया जाएगा।

जिले में 182 उपार्जन केंद्रों के पर्यवेक्षण एवं नियंत्रण हेतु जिला स्तरीय नोडल एवं उपार्जन केन्द्र नोडल अधिकारियों की नियुक्ति कर उन्हे प्रशिक्षण दिया जा चुका है। इसके अलावा कोचियो एवं बिचोलियों की सूची तैयार कर अनुविभागीय अधिकारी, तहसीलदार को प्रस्तुत किया जा चुका है। खरीफविपणन वर्ष 2024-25 हेतु आवश्यक व्यवस्था पूर्ण करने हेतु चेक लिस्ट अनुसार (35 बिन्दु) पूर्ण करा ली गई है। शासन द्वारा खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में कस्टम मिलिंग नीति में अनुमानित धान खरीदी 1245963 मे.टन के विरुद्ध भारतीय खाद्य निगम में 439181 एवं नागरिक आपूर्ति निगम में 119900 कुल 559081 मे. टन चावल जमा की कार्य योजना प्राप्त हुई है। जिले में कृषक उन्नति योजना के तहत किसानों से 3100 रूपए प्रति क्विंटल की दर और प्रति एकड़ 21 क्विंटल के मान से धान खरीदी का कार्य प्रारंभ होगा जिससे जिले के किसानों में धान खरीदी को लेकर उत्साह का माहौल है। कलेक्टर लंगेह के मार्गदर्शन धान खरीदी की तैयारियां लगभग पूर्ण कर ली गई है। खरीदी केंद्रों में धान खरीदी अवधि, निर्धारित गुणवत्ता, समर्थन मूल्य आदि की जानकारी के सम्बन्ध में बैनर एवं दीवार लेखन का कार्य किया गया है। वहीं किसानों के बैंक खातों के मिलान का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। धान खरीदी केंद्रों में किसानों की सुविधा हेतु स्थल की साफ-सफाई, पेयजल, किसानों के बैठने हेतु छायादार स्थान, त्रुटिरहित धान खरीदी हेतु कांटा-बांट अथवा इलेक्ट्रॉनिक कांटा का सत्यापन, मॉइश्चर मीटर का कैलीब्रेशन किया गया है। उपार्जन केंद्रों में कैप कवर, बारदाने की व्यवस्था, कम्प्यूटर सेट, प्रिंटर, इंटरनेट सुविधा सहित अन्य व्यवस्थाएं की गई हैं।

धमतरी पुलिस यातायात द्वारा गैरेज के बाहर खड़े वाहनों को हटाकर किया गया यातायात व्यवस्थित

यातायात टॉफद्वारा यातायात व्यवस्था बनाने एवं सड़क दुर्घटना में कमी लाने के लिए बस्तर रोड में किया गया पैदल पेट्रोलिंग

ब्यूरों सैय्यदा मुनीजा़ हुसैनी धमतरी छत्तीसगढ़। पुलिस अधीक्षक धमतरी के निर्देशानुसार उप पुलिस अधीक्षक यातायात एवं यातायात स्टॉफ द्वारा सुगम सुरक्षित यातायात व्यवस्था बनाने, सड़क दुर्घटना में कमी लाने के लिए पैदल पेट्रोलिंग कर गैरेज संचालकों को समझाईश दी गई। रत्नाबांधा चौक से अंबेडकर चौक तक स्थित गैरेज के संचालकों द्वारा गैरेज में आने वाले वाहन को मार्ग में खड़े कर देने से मार्ग बाधित होने के साथ ही दुर्घटनाओं की संभावना बनी रहती है, जिसे देखते हुए पैदल पेट्रोलिंग कर गैरेज संचालकों को समझाईश दिया गया, कि अपने वाहनों को गैरेज के अंदर रखे, गैरेज के बाहर रोड किनारे वाहन खड़े नही करने निर्देशित किया गया।साथ ही नो पार्किंग में खड़े वाहनों पर भी कार्यवाही की गई। यातायात पुलिस गैरेज संचालकों को निर्देशित करता है, कि आपके गैरेज में मरम्मत हेतु आने वाले वाहनों की मरम्मत गैरेज के अंदर करें साथ ही मार्ग में खड़े जर्जर वाहनों को मार्ग से हटाकर सुरक्षित स्थान पर रखें। निर्देशों के पालन नही किये जाने पर गैरेज संचालकों के विरूद्ध उचित वैधानिक कार्यवाही की जावेगी।

जहर मुक्त भारत के विषय पर व्याख्यान

महासमुंद(समय दर्शन)। ग्राम तिलंजनपुर में एनएसएस शिविर के दौरान जहर मुक्त भारत का कार्यक्रम दिनांक 10/11/24 दिन रविवार को आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉक्टर सुभाष प्रधान (पिरदा), गणेश साहू, व शंकर लाल पंडा, भारी संख्या में गांव के गणमान्य नागरिक भी उपस्थित थे।डॉ. प्रधान जी ने कहा कि आज हमारे देश के अनाज, सब्जियों फल इत्यादि सब विषैले होते गए, और आज हम उन उस मुकाम तक पहुंच गए हैं कि जिस देश का इतिहास प्रकृति और मौसम आधारित खेती से भरा पडा अब उसी देश मैं जैविक खेती या प्राकृतिक खेती करने के लिए अभियान चलाया जा रहा है और किसानों से बार-बार मिन्नते करना पड़ रहा है कि इस जहरीली खेती को छोड़कर हमारे पूर्वजों की गोबर आधारित एवं बहुफसली प्रणाली को अपना लो । वैसे तो ये काम बहुत कठिन है, परन्तु मजबूत इच्छाशक्ति और सही नीयत से साथ किया जाए तो बहुत सरल है। अंत में उन्होने यह भी कहा कि जहर युक्त अनाज के कारण ही दस साल के बच्चे को शुगर, कैंसर,जैसे खतरनाक बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है। कार्यक्रम अधिकारी बी के साव, सहायक कार्यक्रम अधिकारी पी प्रधान, व सुनिता मांझी भी उपस्थित रहे।

श्री सत्य साई सेवा संगठन द्वारा आयोजित 24 घंटे का विश्व अखंड भजन श्रद्धा पूर्वक सिवनी में हुआ संपन्न

सिवनी चांपा श्री सत्य साई सेवा संगठन के निर्देशानुसार सिवनी, जांजगीर चांपा, सक्ति एवं रायगढ़ समिति के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 9 एवं 10 नवम्बर को विश्व अखंड भजन का कार्यक्रम ग्राम सिवनी के सेवादल परिसर में आयोजित किया गया था, कार्यक्रम का शुभारम्भ 9 नवंबर को 5:45 बजे दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया दीप प्रज्ज्वलन जिलाध्यक्ष जितेंद्र देवांगन, सहायक प्रशांति सेवा प्रभारी मनोज यादव, सहायक शैक्षणिक प्रभारी महिला श्रीमति अंजुलता यादव एवं जिला आध्यात्मिक प्रभारी महिला श्रीमति निर्मला देवांगन ने संयुक्त रूप से किया, तत्पश्चात सभी समिति के संयोजकों ने भगवान श्री सत्य साई बाबा के चरणों में स्वागत पुष्प गुच्छ अर्पित किया इसके बाद वेदपाठ, प्रार्थना, ओमकारम् एवं मंत्रोचार के साथ अखंड भजन का भक्तिमय आगाज हुआ, कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष सहित जिले के सभी पदाधिकारियों सहित 385 सदस्यों की उपस्थिति रही 9 नवंबर शाम 5:45 से निरंतर 24 घंटे ग्राम का माहौल भक्तिमय बना हुआ था, कार्यक्रम में ग्राम के गणमान्य नागरिकों सहित 180 से अधिक सदस्य उपस्थित थें, 10 नवंबर रविवार को शाम 5:45 में भजन विराम हुआ तत्पश्चात श्री हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ किया गया, तत्पश्चात कार्यक्रम को जिला अध्यात्मिक प्रभारी राकेश देवांगन ने सम्बोधित किया, तदुपरांत भगवान बाबा की महामंगल आरती के साथ संपन्न हुआ, बाबा की आरती सिवनी समिति संयोजक रामनारायण राठौर एवं विद्या ज्योति के राज्य प्रभारी अमित शर्मा ने किया आभार प्रदर्शन समिति संयोजक सिवनी रामनारायण के द्वारा किया गया कार्यक्रम को सफल बनाने में सिवनी समिति के सभी सदस्यों सहित पदाधिकारीगण का व्यापक सहयोग रहा।

कुंभकार महासंघ फुलझर अंचल का तीन दिवसीय चक्रपूजा महोत्सव 6 से 8 दिसंबर को बोइरडीह में आयोजित

महासमुंद (समय दर्शन)। ग्राम बोइरडीह, शाखा सभा पिरदा में कुंभकार महासंघ फुलझर अंचल द्वारा तीन दिवसीय चक्रपूजा महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है, जो 6 से 8 दिसंबर 2024 तक चलेगा। महासंघ के महासचिव धर्मेन्द्रनाथ राणा द्वारा इस आयोजन की विस्तृत जानकारी दी गई है। महोत्सव का शुभारंभ 6 दिसंबर को कलश यात्रा और मूर्ति स्थापना के साथ होगा, जिसके उपरांत कुराल पुराण कथा का आयोजन किया जाएगा। यह पवित्र आयोजन श्रद्धालुओं के लिए एक विशेष धार्मिक अनुभव प्रदान करेगा।

7 दिसंबर को महोत्सव के द्वितीय दिवस पर विशेष अतिथियों का स्वागत, सम्मान समारोह और आमसभा का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर क्षेत्र के गणमान्य व्यक्ति एवं समाज के वरिष्ठजन उपस्थित रहेंगे, जो महोत्सव की गरिमा को बढ़ाएंगे। महोत्सव के अंतिम दिन, 8 दिसंबर को मूर्ति विसर्जन एवं पूर्णाहुति की रस्में संपन्न होंगी, जिससे महोत्सव का समापन होगा। इसके साथ ही, रात्रिकालीन कार्यक्रम भी हर दिन का मुख्य आकर्षण रहेंगे, जो दर्शकों का मनोरंजन करने के साथ ही, संस्कृति की समृद्ध धरोहर को प्रस्तुत करेंगे। धर्मेन्द्रनाथ राणा ने सभी श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे इस पावन अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

जनपद पंचायत बलौदा के ग्राम पंचायत करमंदा में जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविर का हुआ आयोजन

कलेक्टर श्री आकाश छिकारा ने शिविर में दी शासन की योजनाओं की जानकारी

जनसमस्या निवारण शिविर के माध्यम से आमजनों की समस्याओं का निराकरण करने के दिए निर्देश

जनसमस्या निवारण शिविर में 362 आवेदन हुए प्राप्त

जांजगीर-चांपा/ मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के मंशानुरूप जिला प्रशासन द्वारा ग्रामीणों की मांग एवं समस्याओं के समाधान तथा शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं लाभ देने के लिए आज जनपद पंचायत बलौदा के ग्राम पंचायत करमंदा में जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में स्थानीय नागरिक सहित आस-पास गांव के ग्रामीण बड़ी संख्या में शामिल हुए। शिविर में माँग एवं समस्याओं से संबंधित कुल 362 आवदेन प्राप्त हुए। प्राप्त सभी आवेदनों को समय सीमा में दर्ज कराया गया है। इस दौरान विभाग द्वारा लगाए गए स्टॉल का कलेक्टर श्री आकाश छिकारा सहित अतिथियों ने अवलोकन किया और विभिन्न योजनाओं के हितग्राहियों को शिविर के माध्यम से योजनाओं से लाभांवित किया गया।

जन समस्या निवारण शिविर को संबोधित करते हुए कलेक्टर श्री आकाश छिकारा ने कहा कि शासन की योजनाएं आम नागरिक तक पहुंचे और उनका क्रियान्वयन शत प्रतिशत हो इसको लेकर जिले में जन समस्या निवारण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने शासन द्वारा चलाये जा रहे जनकल्याणकारी योजनाओं व जिला प्रशासन द्वारा किये जा रहे नवाचार कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए कहा कि आयुष्मान कार्ड के माध्यम से विभिन्न प्रकार के स्वास्थ्य सेवाओं के साथ साथ आप 5 लाख तक स्वास्थ्य लाभ ले सकते हैं। इसी प्रकार पीएम सम्मान निधि, विश्वकर्मा योजना शासन द्वारा चलाई जा रही है जिसका अधिक से अधिक लाभ लें। इस दौरान उन्होंने उत्कृष्ट जांजगीर के तहत चलाए जा रहे अभियान की जानकारी दी। इसके अलावा स्वस्थ जांजगीर, दिव्यंगता शिविर, आजीविका ऋण मेला की जानकारी दी गई।उन्होंने कहा कि जनसमस्या निवारण शिविर का आयोजन भी शासन-प्रशासन के सभी विभागों को एक जगह उपस्थित होकर आम लोगों की समस्या, जरूरत व मांगों का समाधान करने व जरूरतमंद व पात्र हितग्राहियों व जनहित के मुद्दे का निराकरण करने आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पीएम आवास योजना के माध्यम से ग्रामीणों को आवास का लाभ दिया जा रहा है।

शिविर में कृषि विभाग, महिला बाल विकास विभाग, स्वास्थ्य विभाग, पशुपालन विभाग, आयुर्वेद विभाग आदि द्वारा जानकारी प्रदान की गई। शिविर में गोद भराई, बच्चों का अन्नप्राशन, मोटराईज्ड ट्राइसायकल, जाति प्रमाण पत्र का वितरण, किसान किताब, स्व सहायता समूह को सी आई एफ की राशि का वितरण, श्रम कार्ड, आयुष्मान कार्ड का वितरण, पेंशन पत्रक, पी एम आवास हितग्राहियों को आवास की चाबी और नए हितग्राहियों स्वीकृत पत्र आदेश का वितरण शिविर के माध्यम से लाभांवित किया गया। इस अवसर पर जनपद पंचायत अध्यक्ष श्रीमती नम्रता कन्हैया राठौर, जनपद पंचायत सदस्य श्रीमती बबीता साहू, सहायक कलेक्टर श्री दुर्गाप्रसाद अधिकारी, एसडीएम श्री विक्रांत अंचल, जनपद पंचायत सीईओ श्री आकाश सिंह सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारी कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में नागरिकजन उपस्थित रहे।

सार समाचार

सरेआम शराब पीते 16 लोग गिरफ्तार

रायपुर(समय दर्शन)। राजधानी पुलिस ने नशेड़ियों के खिलाफ अभियान चलाकर सरेआम शराब पीते 16 लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ आबकारी एक्ट के तहत कार्रवाई की है। मिली जानकारी के अनुसार पुरानी बस्ती पुलिस ने खोखोपारा तालाब के पार में सरेआम शराब पीते आरोपी बादल सिंह 23 वर्ष, नेहा सिंह 28 वर्ष, मदन यादव 28 वर्ष, मुकेश यादव 19 वर्ष, तुलसीराम निषाद 24 वर्ष व प्रशांत वर्मा 34 वर्ष को गिरफ्तार किया है। वहीं तेलीबांधा पुलिस ने आरोपी कुंजन मिश्रा 44 वर्ष, दिनेश निषाद 25 वर्ष व चिंटर पाल सिंह 34 वर्ष को गिरफ्तार किया है। इसी तरह कोतवाली पुलिस ने आरोपी सुनील राजपूत 22 वर्ष, मंदिरहसौद पुलिस ने आरोपी गणेश साहू 42 वर्ष, मोवा पुलिस ने आरोपी जितेन्द्र मारकण्डे 32 वर्ष, खरोरा पुलिस ने आरोपी लाला सिन्हा 43 वर्ष एवं विधानसभा पुलिस ने आरोपी धनंजय साहू 32 वर्ष, राकेश साहू 26 वर्ष व हेमंत जायसवाल 23 वर्ष को गिरफ्तार किया है।

कार की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत

रायपुर(समय दर्शन)। मठपुरैना रोड भाठागांव में अज्ञात कार चालक ने बाइक को टक्कर मार दिया। जिससे एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं दूसरा युवक घायल है। जिसे उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती किया गया है। मिली जानकारी के अनुसार मृतक हरविंदर 23 वर्ष अपने दोस्त के साथ बाइक क्रमांक सीजी 05 एएच 5415 से कहीं जा रहा था, तभी भाठागांव मठपुरैना रोड में अज्ञात सफेद रंग की कार ने बाइक को टक्कर मार दिया। जिससे बाइक सवार हरविंदर सिंह की मौत हो गई। मामले में पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। वहीं अज्ञात कार चालक के खिलाफ अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

अस्पताल के पार्किंग से बाइक पार

रायपुर(समय दर्शन)। सोनी मल्टी अस्पताल के पार्किंग से अज्ञात चोर ने बाइक पार कर दिया। प्रार्थी की शिकायत पर अभनपुर पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी देवेन्द्र कुमार यादव 45 वर्ष उपरारा अभनपुर का रहने वाला है। प्रार्थी ने थाना में शिकायत किया कि वह अपनी बाइक क्रमांक सीजी 04 डीयू 8649 को सोनी मल्टी अस्पताल के पार्किंग में खड़ी किया था, तभी अज्ञात चोर ने पार कर दिया। चोरी गए बाइक की कीमत करीब 10 हजार रुपए के आसपास बताई जा रही है।

विधि मंत्री अरुण साव से छत्तीसगढ़ीभाषी प्रतिनिधिमंडल ने की मुलाकात

छत्तीसगढ़ को ख वर्ग श्रेणी में शामिल करने की मांग को लेकर छत्तीसगढ़ी भाषी प्रतिनिधिमंडल ने विधि मंत्री से मुलाकात की

रायपुर(समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना के 25वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है. राज्य भर में उत्सव का माहौल है. और रजत जयंती वर्ष के इसी उत्सव के बीच छत्तीसगढ़ीभाषी राज का मुद्दा भी गर्म है. क्योंकि राज्य का निर्माण छत्तीसगढ़ी अस्मिता की पृष्ठभूमि पर हुआ था. लेकिन राज्य निर्माण के बाद से अस्मिता को दरकिनार कर दिया गया. क्योंकि राज्य निर्माण के साथ जब केंद्र सरकार की ओर से एक पत्र राज्य सरकार को लिखा गया था, जिसमें में पूछा किया गया था कि छत्तीसगढ़ को क वर्ग में रखा जाए या ख वर्ग में. लेकिन तब राज्य सरकार की ओर से इस पर किसी तरह का स्टैंड नहीं लिया गया. नतीजन छत्तीसगढ़ क वर्ग(हिंदीभाषी) राज्य में शामिल कर लिया गया. अब यह राज्य का एक बड़ा मुद्दा बनते जा रहा है. आज इसी मांग को छत्तीसगढ़ीभाषी प्रतिनिधिमंडल ने विधि मंत्री अरुण साव से उनके निवास पर मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल की ओर से साहित्यकार और प्राध्यापक डॉ. सुधीर शर्मा ने विधि मंत्री साव को दस्तावेजों के साथ मांग पत्र सौंपा. डॉ. शर्मा ने केंद्र और राज्य सरकार के बीच 2002 और 03 में हुए पत्राचार की विस्तार से जानकारी दी। विधि मंत्री साव ने प्रतिनिधिमंडल के साथ हुई चर्चा में आश्वस्त किया कि यह एक महत्वपूर्ण विषय है. इस पर सरकार की ओर से पूर्ण प्रयास किया जाएगा. छत्तीसगढ़ी अस्मिता हमारी महतारी अस्मिता है. इस महत्वपूर्ण विषय की ओर आप सबने ध्यान आकृष्ट कराया है. यह हम सबकी जिम्मेदारी है कि छत्तीसगढ़ी और छत्तीसगढ़ियों के साथ न्याय हो। गौरतलब है कि इसे पूर्व रायपुर में छत्तीसगढ़ीभाषियों का एक बड़ा सम्मेलन अक्टूबर महीने में हुआ था. इस सम्मेलन में विशेष रूप से छत्तीसगढ़ी राजभासा मंच के संरक्षक नंदकिशोर शुक्ल शामिल हुए थे। छत्तीसगढ़ीभाषी प्रतिनिधिमंडल में वरिष्ठ पत्रकार रामअवतार तिवारी, मनोज सिंह बघेल, सत्यपाल सिंह, वरिष्ठ रंगकर्मी विजय मिश्रा, विकास शर्मा, छात्र संगठन के ऋतुराज साहू, संजीव साहू और मोर चिन्हारी छत्तीसगढ़ी मंच के संयोजक डॉ. वैभव बेमेतरिहा मौजूद रहे।

करोड़ों की ठगी करने वाले चार आरोपी गिरफ्तार

रायपुर(समय दर्शन)। पुलिस महानिरीक्षक रायपुर रेंज अमरेश मिश्रा के निर्देशन पर रेंज साइबर थाना रेंज रायपुर टीम द्वारा साइबर अपराधों में तकनीकी साक्ष्य एकत्र कर विवेचना किया जा रहा है। निर्देसानुसार कार्यवाही करते हुए विवेचना क्रम में रेंज साइबर थाना द्वारा कार्यवाही करते हुए शेयर ट्रेडिंग के नाम पर ठगी करने वाले चार अंतरराज्यीय साइबर आरोपियों को 24 परगना वेस्ट बंगाल, द्वारिका दिल्ली, विजयवाडा आंध्रप्रदेश एवं कोलार कॉलोनी भोपाल मध्यप्रदेश, से गिरफ्तार किया गया है। केश 1 प्रार्थी रश्मि ने शेयर ट्रेडिंग में मुनाफा कमाने के नाम से उनसे 88 लाख रुपए की ठगी होने की रिपोर्ट रेंज साइबर थाना में दर्ज कराई थी। रिपोर्ट पर रेंज साइबर थाना रायपुर में अपराध क्रमांक 14/24 धारा 318(4), 3(5), 238, 111 पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। विवेचना क्रम में पूर्व में उत्तर प्रदेश, बिहार, चेन्नई, कोलकाता से पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। अपराध में शामिल दो अन्य आरोपी 1 सुमन सिल पिता अमल सिल उम्र 28 वर्ष पता टेपुल, मेडिया स्वरूप नगर 24 परगना वेस्ट बंगाल 2 देवराज कुशवाहा पिता रामपाल उम्र 40 वर्ष पता कोलार कॉलोनी भोपाल मध्यप्रदेश को गिरफ्तार किया गया है। प्रकरण में 84 लाख रुपए विभिन्न बैंक खाता में होल्ड कराया गया है। केश 2 प्रार्थी अनिमेष तिवारी ने शेयर ट्रेडिंग में मुनाफा कमाने के नाम से उनसे 99 लाख रुपए ठगी होने की रिपोर्ट थाना तेलीबांधा में दर्ज कराया था। रिपोर्ट पर अपराध क्रमांक 644/24 धारा 318 (4), 61 बीएनएस पंजीकृत कर विवेचना रेंज साइबर थाना रायपुर को सौंपी गई थी। विवेचना क्रम में आरोपी दीपक पिता जगदीश उम्र 29 वर्ष ग्राम भाकरोली, संभल, उत्तर प्रदेश जो छिपकर जेजे कॉलोनी द्वारिका सेक्टर 3 दिल्ली में रह रहा था को गिरफ्तार किया गया है। केश 3 प्रार्थी महेश चंदानी ने शेयर ट्रेडिंग के नाम से उनसे 1.16 करोड़ रुपए की ठगी होने की रिपोर्ट थाना पंडरी में अपराध क्रमांक 261/24 धारा 420,34 भादवि दर्ज कराया था।

सेवानिवृत्त विंग कमांडर ओझा को राजकीय सम्मान के साथ दी गई भावभीनी विदाई

मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि के रूप में विधायक मिश्रा एवं कलेक्टर डॉ. सिंह ने अंतिम संस्कार पर उपस्थित होकर दी श्रद्धांजलि

रायपुर(समय दर्शन)। सेवानिवृत्त विंग कमांडर एमबी ओझा को आज महादेव घाट स्थित मुक्ति धाम में राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी गई। श्री ओझा को सेना के जवानों के द्वारा गॉड ऑफ ऑनर दिया गया। श्री ओझा का 10 नंवबर को निधन हो गया था। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने उनके प्रति शोक संवेदनाएं व्यक्त की हैं। मुख्यमंत्री श्री साय के प्रतिनिधि के रूप में आज विधायक श्री पुरंदर मिश्रा और कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह महादेवघाट मुक्तिधाम पहुंचकर श्री ओझा के पार्थिव शरीर पर पुष्प चक्र अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। विधायक श्री मिश्रा, कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह सहित वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री संतोष सिंह और अन्य सैन्य अधिकारियों ने श्री ओझा की अंतिम यात्रा में पार्थिव शरीर को कंधा दिया। चीफऑफआर्मी स्टाफ, चीफऑफ एयर स्टाफ, जनरल आफिसर कमांडिंग इन चीफ मध्य कमान, जीओसी मध्य भारत एरिया, सीओएसए कमांडर की ओर सैन्य अधिकारियों ने श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर एसएसपी संतोष सिंह, राज्य सैनिक बोर्ड के संचालक ब्रिगेडियर श्री विवेक शर्मा रिटायर्ड कर्नल, श्री धर्मवीर सिंह चौहान, कर्नल श्री सुमीत शर्मा, कर्नल श्री राकेश बरतवाल, एयरकुमाडोर श्री एलिक्स पिंटो, सहित सेना के अन्य अधिकारियों ने भी श्री ओझा को भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी।

रेत के अवैध उत्खनन : एक पनडुब्बीनुमा मशीन चेन माउन्टेन, दो हाईवा तथा तीन ट्रैक्टर जब्त

खनिज विभाग की टीम की ताबड़तोड़ कार्रवाई जारी

रायपुर(समय दर्शन)। कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह के मार्गदर्शन में रायपुर जिले में गौण खनिजों के उत्खनन एवं अवैध परिवहन के मामले में कार्रवाई का सिलसिला लगातार जारी है। उप संचालक खनिज के.के. गोलघाटे के निर्देशन में खनिज अधिकारियों की टीम अलग-अलग क्षेत्रों में दबिश देकर अवैध उत्खनन एवं परिहवन में संलिप्त लोगों के विरूद्ध कार्रवाई कर रही है। खनिज विभाग के सुपरवाइजर सुनीलदत्त शर्मा एवं उनकी टीम ने बीते दिनों आरंग इलाके के ग्राम गुदगुदा में रेत अवैध खनन में संलिप्त पनडुब्बी नुमा मशीन, एक चेन माउन्टेन और एक हाईवा को मौके से जप्त कर थाना आरंग के सुपुर्द करने की कार्रवाई की। इससे पूर्व इस टीम ने रेत के अवैध परिवहन कर रहे तीन टैऊक्टर एवं एक हाईवा को आरंग के समीप ग्राम कुरूद से जब्त कर थाना गिद्धपुरी को सुपुर्द किया। इस कार्रवाई में सुपरवाइजर बेलचंदन, डी के साहू व सैनिक रूपेश चंद्राकर, राजू बर्मन, गोलू वर्मा, केदार वर्मा, लुकेश वर्मा, प्रेम कुर्रे एवं पुलिस के जवानों का सहयोग रहा।

विधायक देवेन्द्र यादव की रिमांड तीन दिन बढ़ी

रायपुर(समय दर्शन)। बलौदाबाजार आगजनी मामले में गिरफ्तार किये गये भिलाई विधायक देवेन्द्र यादव की न्यायिक रिमांड 14 नवंबर तक के लिए बढ़ा दी गई है। बिलासपुर हाईकोर्ट में लगे जमानत याचिका पर आज सोमवार को सुनवाई हुई। बता दें कि बलौदाबाजार आगजनी मामले में गिरफ्तार किये गये भिलाई विधायक देवेन्द्र यादव को रिमांड खत्म होने के बाद जमानत सोमवार को विडियों कांफ्रेंसिंग के जरिये बिलासपुर हाईकोर्ट में पेश किया गया। जहां पुलिस ने चालान पेश करने के लिए और समय की मांग की जिसपर विधायक के वकील ने आपत्ति की किंतु कोर्ट ने पुलिस की मांग पर विधायक यादव की रिमांड तीन दिन यानि 14 नवंबर तक के लिए और बढ़ा दी। अब पुलिस के द्वारा 14 नवंबर को हाईकोर्ट में अभियोग पत्र प्रस्तुत किया जाएगा। बता दें कि बलौदाबाजार आगजनी मामले में पुलिस ने भिलाई विधायक देवेन्द्र यादव को 17 अगस्त को उनके निवास स्थान भिलाई सेक्टर 5 से गिरफ्तार किया था। विधायक यादव पर 10 जून को बलौदा बाजार में हुए हिंसक प्रदर्शन में शामिल होने का आरोप है।

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भोपाल के स्मार्ट सिटी पार्क में एक पौधा प्रतिदिन अभियान के तहत पौधारोपण किया.

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और विधायक ने किया रायपुर दक्षिण में जनसंपर्क

रायपुर(समय दर्शन)। भाजपा रायपुर दक्षिण विधानसभा उपचुनाव की तैयारी मिशन मोड पर चल रही हैं आज रायपुर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र प्रत्याशी सुनील सोनी के पक्ष में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव व दुर्ग ग्रामीण विधायक व राज्य ग्रामीण एवं अन्य पिछड़ा वर्ग क्षेत्र विकास प्राधिकरण उपाध्यक्ष ललित चंद्राकर ने सधन जन सम्पर्क कर सामाजिक कार्यकर्ता व आम नागरिकों से मुलाकात कर मोदी की गारंटी और विष्णु के सुशासन की जानकारी प्रदान कर 13 नवंबर को कमल का बटन दबाकर सुनील सोनी को प्रचण्ड मतों से विजय बनाने अपील किया गया। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह ने कहा रायपुर दक्षिण के विकास के लिए सुनील सोनी ज़रूरी है आप सभी से निवेदन है कि 13 तारीक को कमल फूल छाप पर बटन दबाकर सुनील सोनी को प्रचण्ड मतों से विजय बनना है आप सभी को प्रणाम आप सभी का आशीर्वाद सदैव भारतीय जनता पार्टी को इसी तरह मिलता रहे। इस अवसर पर विधायक ललित चंद्राकर ने कहा कि डबल इंजन सरकार में विकास तेज गति से होता हैं जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण मोदी की गारंटी और विष्णु का सुशासन हैं। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जी की दस माह सरकार को बने हुए है और लगातार जनहित में निर्णय लेकर स्वर्णिम इतिहास रच दिया हैं। महतारी वंदन योजना, कृषक उन्नति योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना स्वीकृत, दो वर्ष का बकाया बोनस प्रदान जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। रायपुर की उन्नति, प्रगति और विकास के लिए सुनील सोनी जी भारी मतों से विजय बनाना है।

स्कूल शिक्षा सचिव सिद्धार्थ कोमल सिंह परदेशी ने निभाई शिक्षक की भूमिका

विद्यार्थियों को सिखाया कृत्रिम उपग्रह का विज्ञान

रायपुर(समय दर्शन)। स्कूल शिक्षा सचिव सिद्धार्थ कोमल सिंह परदेशी ने महासमुंद जिले के उड़ीसा सीमा से सटे वनांचल क्षेत्रों में स्थित विभिन्न विद्यालयों का अचानक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने छात्रों की शैक्षिक प्रगति, स्कूलों की सुविधाओं और शैक्षिक गतिविधियों का गहन अवलोकन किया। बच्चों के उत्साही उत्तरों से प्रभावित होकर श्री परदेशी ने उनकी समझ और ज्ञान की सराहना की। निरीक्षण के दायरे में आने वाले स्कूलों में हायर सेकेंडरी स्कूल बेलसोंडा, प्राथमिक शाला ओंकारबंद, पीएम श्री स्कूल खोपड़ी, मिडिल एवं हाई स्कूल खोपली, मिडिल और हाई स्कूल कसेकेरा, मिडिल स्कूल कुलिया, और कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय सुनसुनिया शामिल थे। निरीक्षण के दौरान श्री परदेशी ने कुछ समय के लिए शिक्षक की भूमिका निभाते हुए विद्यार्थियों को कृत्रिम उपग्रह के बारे में समझाया। उन्होंने बच्चों से विज्ञान, भूगोल और सामान्य ज्ञान से जुड़े सवाल पूछे। बच्चों से भारत के महान वैज्ञानिकों, इंद्रधनुष के रंगों की संख्या, छत्तीसगढ़ के जिलों और पड़ोसी राज्यों के बारे में सवाल किए गए, जिनका बच्चों ने सही जवाब दिया। छोटे बच्चों से रंगों और फलों से जुड़े सवाल भी पूछे गए, जिनमें अधिकांश बच्चों ने सही उत्तर दिए। कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय सुनसुनिया की छात्राओं ने शिक्षा सचिव से राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से रक्षाबंधन पर्व पर हुई मुलाकात का अपना अनुभव साझा किया जिसे छात्रों ने एक अविस्मरणीय पल बताया। इस पर सचिव ने कहा कि आज की बालिकाएं और महिलाएं हर क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं, वे सुई से लेकर हवाई जहाज तक उड़ा रही हैं। यह समाज में महिला सशक्तिकरण का एक शानदार उदाहरण है। निरीक्षण में शौचालयों की तालाबंदी देखकर श्री परदेशी ने प्रधानपाठक और प्राचार्य को नाराजगी जताते हुए निर्देश दिए कि सभी सुविधाएं बच्चों के लिए सुलभ होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि शासन से प्राप्त सामग्री बच्चों के उपयोग के लिए खुली और उपलब्ध रहनी चाहिए। इसके अलावा, उन्होंने शौचालयों में स्वच्छता बनाए रखने और उन्हें स्कूल समय में खुला रखने के निर्देश के साथ ही परिसर की साफ-सफाई, पुस्तकालय का अधिकतम उपयोग, प्रयोगशाला का उपयोग, शिक्षकों की समय पर उपस्थिति, शिक्षक डायरी का संधारण और शासन के दिशा-निर्देशों का समयानुसार पालन करने पर भी जोर दिया। निरीक्षण के अवसर पर रायपुर संभाग के संयुक्त संचालक राकेश पांडे, जिला शिक्षा अधिकारी मोहन राव सावंत, आलोक चांडक, जिला मिशन समन्वयक कमल नारायण चंद्राकर सहित अन्य अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

उपचुनाव के ठीक पहले कार से बरामद किये गये 27 लाख रुपए नगद

रायपुर(समय दर्शन)। रायपुर दक्षिण उपचुनाव की सुरक्षा चेकिंग के दौरान 27 लाख रुपए की नगदी बरामद की गई है। आरोपी कार चालक बिना किसी वैध दस्तावेज के बैग में नगदी लेकर जा रहा था। पुरानी बस्ती थाना पुलिस और एसएसटी टीम ने यह बड़ी रकम पकड़ी, और मामला अब आयकर विभाग को सौंप दिया गया है। मिली जानकारी के अनुसार राजधानी के पुरानी बस्ती थाना क्षेत्र के भाटागांव क्षेत्र में उपचुनाव को लेकर विशेष चेकिंग प्वाइंट स्थापित किया गया था। कार्यपालिक मजिस्ट्रेट राजकुमार सिंह परस्ते की मौजूदगी में चेकिंग के दौरान एक कार क्रमांक सीजी 08 एआर 8800 को रोका गया तथा उसकी तलाशी ली गई। तलाशी में कार से एक काले रंग के बैग में 27 लाख 10 हजार रुपए नगद पाए गए। कार सवार से इस रकम के वैध दस्तावेज की मांग की गई, तो कार सवार ने किसी भी प्रकार का प्रमाण प्रस्तुत करने में असमर्थता जताई। जिसके बाद पुलिस की टीम ने आचार संहिता के तहत नगदी रकम को जब्त कर लिया और आगे की जांच के लिए आयकर विभाग को सौंप दिया गया।

संपादकीय

बीमार समाज और खराब वातावरण

दिल्ली की वायु गुणवत्ता सूचकांक में लगातार गिरावट जारी है। जो पांच सौ के पार जा चुकी है। वायु प्रदूषण के इस स्तर को खतरनाक से भी खतरनाक वाले स्तर पर बताया जा रहा है। आंकड़ों के अनुसार राजधानी के आसमान पर धूल की मोटी परत छाई हुई है। दिल्ली व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का पीएम 2.5 बाताया गया, जो वि स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित सीमा से पैंसठ गुना अधिक खतरनाक पाया गया। इस गंभीरता को इससे समझा जा सकता है कि शून्य से पचास को अच्छा व 51 से सौ को संतोषजनक माना जाता है। जो बढ़ते-बढ़ते 401-450 के बीच गंभीर व 451 से ऊपर बेहद गंभीर माना जाता है। खबरें हैं कि उन्हें सन संबंधी समस्याओं के अलावा खांसी जैसी समस्याएं आम हैं। गले में खुश्की और खराश की शिकायतें भी खूब की जा रही हैं। दिवाली में जलाए गए पटाखों से उठा धुंआ भी इस अचानक खतरनाक हुई हवा का कारण बताया जा रहा है। पटाखों को प्रतिबंधित करने तथा लगातार जागरूकता फैलाने के बावजूद कोई खास असर होता नहीं नजर आ रहा। सारा दोष आतिशबाजी को देना उचित नहीं है क्योंकि दिवाली के साथ ही हवा की मंद पड़ती गति व लगातार स्मॉग बने रहने के चलते भी वायु प्रदूषण जानलेवा बन गया। दिल्ली-एनसीआर का यह इलाका प्रतिवर्ष इसी मौसम में देश भर में सबसे प्रदूषित के दायरे में आ जाता है। कहा जाता है कि इसके कारणों में वाहनों की हिस्सेदारी 16त्न से अधिक होती है। परंतु पराली के धुएं की भागीदारी बढ़कर 35त्न तक बढ़ गई थी। हरियाणा, पंजाब व उप्र से आने वाली हवाओं को इसका दोषी ठहराया जाता है। जब तक यह स्तर खतरनाक बताया जाता है, दोषारोपण भी उसी गति से बढ़ता रहता है। हवा की गुणवत्ता को सुधारने के प्रति न तो ठोस कदम उठाए जाते हैं, न ही इन चेतावनियों को गंभीरतापूर्वक लिया जाता है। वायु प्रदूषण के चलते इन इलाकों के आधे से अधिक बाशिंदों को विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतें तो हैं ही। ढेरों लोग बेमौत मारे भी जाते हैं। विचारणीय है कि देश के 72 देशों में वायु गुणवत्ता खराब के दायरे में आने के कारणों की पड़ताल होनी चाहिए। हम अपनी आने वाली नस्लों को बीमार समाज और खराब वातावरण देकर किसी का भला नहीं कर रहे। हम इस गंभीरता पर समय रहते चेते नहीं इसलिए आज इस खतरनाक स्तर को झेलने को मजबूर हैं।

बाकू सम्मेलन अमीर देशों की उदासीनता दूर कर पायेगा

ललित गर्ग

संयुक्त राष्ट्र का दो सप्ताह का जलवायु सम्मेलन कॉप-29 11 अक्टूबर सोमवार से अजरबैजान की राजधानी बाकू में शुरू हो गया है। पर्यावरण से जुड़े इस महाकुंभ में भारत समेत लगभग 200 देश हिस्सा ले रहे हैं। इसमें जलवायु परिवर्तन के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील देशों के लिए जलवायु वित्त का नया लक्ष्य तय करने, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापमान की वृद्धि को सीमित करने और विकासशील देशों के लिए समर्थन जुटाने पर सार्थक एवं परिणामकारी भी चर्चाएं होने की संभावनाएं हैं। साथ ही इसमें पेरिस समझौते के लक्ष्यों को तेजी से आगे बढ़ाने पर समूची दुनिया के देश चर्चा करेंगे। सम्मेलन में भारत की प्रमुख प्राथमिकताएं जलवायु वित्त पर विकसित देशों की जवाबदेही सुनिश्चित करने और ऊर्जा स्त्रोतों के समतापूर्ण परिवर्तन का लक्ष्य प्राप्त करना होंगी। वर्ल्ड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (डब्ल्यूआरआइ) के विशेषज्ञ इस वर्ष के शिखर सम्मेलन से चार प्रमुख परिणामों की उम्मीद कर रहे हैं- नया जलवायु वित्त लक्ष्य, मजबूत राष्ट्रीय जलवायु प्रतिबद्धताओं के प्रति तेजी, पिछले वादों पर ठोस प्रगति और नुकसान व क्षति के लिए अधिक धनराशि। विश्व में तापमान बढ़ोत्तरी, 'अल नीनो' व 'ला नीना' के प्रभावों के चलते मौसम की घटनाओं से पूरी दुनिया प्रभावित हो रही है। इस बीच एक नए अध्ययन में पूर्वी यूरोप के 10 ऐसे देशों की पहचान की गई है, जो भविष्य में तापमान वृद्धि से सबसे अधिक आर्थिक नुकसान का सामना करेंगे। ऐसे में पूरी दुनिया की निगाहें जलवायु सम्मेलन कॉप-29 में होने वाली चर्चाओं, फैसलों और नतीजों पर टिकी हैं।

कॉप-29 सम्मेलन को पर्यावरण समस्याओं, चुनौतियों एवं बदलते मौसम के मिजाज को संतुलित करने के लिये महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इस सम्मेलन से दुनिया ने उम्मीदें लगा रखी है। जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने की राह में विकासशील देशों के सामने सबसे प्रमुख अवरोध वित्तीय संसाधनों का अभाव है। अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के बावजूद विकसित देशों का योगदान आवश्यक स्तर से कम है। वर्ष 2022 में विकसित देशों ने 115.9 अरब डालर उपलब्ध कराए और पहली बार 100 अरब डालर के वार्षिक लक्ष्य का आंकड़ा पार हुआ। हालांकि यह अभी भी कम है, क्योंकि अगर विकासशील देशों को जलवायु परिवर्तन से जुड़े लक्ष्य हासिल करने हैं तो 2030 तक हर साल दो ट्रिलियन (लाख करोड़) डालर राशि की

आवश्यकता होगी। कर्ज का अंबार विकासशील देशों की राह में एक और बाधा बना हुआ है। तमाम विकासशील देश कर्ज के बोझ से ऐसे कराह रहे हैं कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए आवश्यक कदम उठाने के लिए उनके पास संसाधन बहुत सीमित हो जाते हैं। इसीलिये जलवायु परिवर्तन के संकट से निपटने के लिए अमीर एवं शक्तिशाली देशों की उदासीनता एवं लापरवाह रवैया एक बार फिर बाकू सम्मेलन कॉप-29 में चर्चा का विषय बन रहा है। दुनिया में जलवायु परिवर्तन की समस्या जितनी गंभीर होती जा रही है, इससे निपटने के गंभीर प्रयासों का उतना ही अभाव महसूस हो रहा है। मिस्र में हुए कॉप 27 में नुकसान एवं क्षतिपूर्ति कोष की पहल हुई थी, लेकिन उसमें पर्याप्त योगदान न होने से उसकी उपयोगिता सीमित बनी हुई है। ऐसे में यह उचित ही होगा कि विकासशील देश उस नुकसान एवं क्षतिपूर्ति मुआवजे पर भी जोर दें, जिसकी चर्चा तो बहुत हुई थी, लेकिन उस दिशा में ठोस कदम नहीं उठाए गए। विकसित देशों की जलवायु परिवर्तन से जुड़ी समस्याओं पर उदासीनता इसलिये भी सामने आ रही है कि विकसित देश कार्बन उत्सर्जन में अपने पुराने और भारी योगदान को अनदेखा करते हुए विकासशील देशों पर जल्द से जल्द उत्सर्जन कम करने के लिए ऐसा दबाव डालते हैं कि वे उनकी गति से ताल मिलाएं। इस प्रकार विकासशील देशों की सामाजिक-आर्थिक वास्तविकताओं का संज्ञान लिए बिना ही अमीर देशों द्वारा लक्ष्य तय किया जाना भी असंतोष का एक कारण बन रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि जलवायु परिवर्तन से उपजी प्रतिकूल मौसमी परिघटनाओं ने उन देशों एवं समुदायों को बहुत ज्यादा क्षति पहुंचाई है, जो ग्लोबल वार्मिंग के लिए अपेक्षाकृत कम जिम्मेदार हैं।

देखा जाए तो आज जीवन के हर पहलू पर जलवायु में आते बदलावों का असर साफ तौर पर नजर आने लगा है। लोगों का स्वास्थ्य भी इससे सुरक्षित नहीं है। बात चाहे आपदाओं के कारण जा रही जानों की हो या इसकी वजह से तेजी से पनपती बीमारियों की, जलवायु परिवर्तन रूप बदल-बदल कर लोगों के स्वास्थ्य पर आघात कर रहा है। ऐसे में स्वास्थ्य पर मंडराते इस खतरे को कहीं ज्यादा संजीदगी से लेने की जरूरत है। बढ़ती गर्मी के प्रति चेतावनी, जीवाश्म ईंधन की सही कीमत का निर्धारण और घरों में ऊर्जा के साफसुथरे साधनों का उपयोग सालाना 20 लाख लोगों की जान बचा सकता है। ऐसे में इस शिखर सम्मेलन से ठीक पहले विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने भी देशों से जीवाश्म ईंधन से अपना नाता तोड़ने का आग्रह किया है। साथ ही सरकारों से आम लोगों को जलवायु में आते बदलावों का सामना करने के काबिल बनाने में मदद करने की वकालत की है। कॉप-29 से ठीक पहले जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य पर जारी अपनी विशेष रिपोर्ट में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वैश्विक नेताओं से जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य को अलग-अलग मुद्दों के रूप में देखना बंद करने का आग्रह किया है। ताकि न केवल लोगों के जीवन को बचाया जा सके, साथ ही मौजूदा और आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वस्थ भविष्य सुनिश्चित किया जा सके। गौरतलब है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 100 से भी ज्यादा संगठनों और 300 विशेषज्ञों के सहयोग से जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों को संबोधित करते हुए कॉप-29 पर यह विशेष रिपोर्ट जारी की है। इस रिपोर्ट में तीन प्रमुख क्षेत्रों लोग, क्षेत्र और ग्रह से जुड़ी महत्वपूर्ण नीतियों पर प्रकाश डाला गया है। रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया में 360 करोड़ लोग ऐसे क्षेत्रों में रह रहे हैं, जो जलवायु में आते बदलावों के प्रति बेहद संवेदनशील हैं। यह वो क्षेत्र हैं जहां खतरा बहुत ज्यादा है। लोगों के जीवन की रक्षा करने के लिए ऐसी स्वास्थ्य प्रणालियों को तैयार करना जरूरी है जो जलवायु में आते बदलावों का सामना कर सकें और मुश्किल समय में भी लोगों के प्राणों की रक्षा कर सकें। स्वास्थ्य और जलवायु नीतियों का मेल मानव प्रगति एवं आदर्श विश्व संरचना के लिए बेहद जरूरी है। वैज्ञानिक और पर्यावरणविद चेतावनी दे रहे हैं कि आने वाले दशकों में वैश्विक तापमान और बढ़ेगा इसलिए अगर दुनिया अब भी नहीं सर्तक होगी तो इक्कीसवीं सदी को भयानक आपदाओं से कोई नहीं बचा पाएगा। भारत के साथ पाकिस्तान और अफगानिस्तान सहित 11 ऐसे देश हैं जो जलवायु परिवर्तन के लिहाज से चिंताजनक श्रेणी में हैं। ये ऐसे देश हैं, जो जलवायु परिवर्तन के कारण सामने आने वाली पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियों से निपटने की क्षमता के लिहाज से खासे कमजोर हैं। औद्योगिक गैसों के लगातार बढ़ते उत्सर्जन और वन आवरण में तेजी से हो रही कमी के कारण ओजोन गैस की परत का क्षरण हो रहा है। इस अस्वाभाविक बदलाव का प्रभाव वैश्विक स्तर पर हो रहे जलवायु परिवर्तनों के रूप में दिखलाई पड़ता है। ग्लोबल वॉर्मिंग की वजह से ग्लेशियर तेजी से पिघल कर समुद्र का जलस्तर तीव्रगति से बढ़ा रहे हैं। जिससे समुद्र किनारे बसे अनेक नगरों एवं महानगरों के डूबने का खतरा मंडराने लगा है। जलवायु परिवर्तन के कारण 2000 से बाढ़ की घटनाओं में 134 प्रतिशत वृद्धि हुई है और सूखे की अवधि में 29 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। पानी के संरक्षण और समुचित उपलब्धता को सुनिश्चित कर हम पर्यावरण को भी बेहतर कर सकते हैं तथा जलवायु परिवर्तन की समस्या का भी समाधान निकाल सकते हैं। दुनिया ग्लोबल वार्मिंग, असंतुलित पर्यावरण, जलवायु संकट एवं बढ़ते कार्बन उत्सर्जन जैसी चिंताओं से रू-ब-रू है। जलवायु परिवर्तन के मोर्चे पर धरती की हालत 'मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की' वाली है। इसीलिए कॉप-29 लगातार जलवायु अराजकता की ओर बढ़ रही पृथ्वी को बचाने का माध्यम बनना बहुत जरूरी है। विकासशील देशों को इसके लिए अपनी आवाज बुलंद करनी होगी, क्योंकि यह न केवल न्याय के दृष्टिकोण से, अपितु मानव अस्तित्व एवं सृष्टि संतुलन के लिहाज से भी बेहद अहम है।

नए मौसम का नया मिजाज

कल जो हमारे कातिल थे, आज हमारे साथ हुए अपराधों की सजा सुनाने के लिए न्याय का हथौड़ा पीट रहे हैं। उनकी आंखों का रंग बदल गया है। कल तक उनसे खून बरस रहा था, वे रक्तवर्णी हो रही थीं, आज उनसे शांति के पैगाम आ रहे हैं, मानवधर्मी सफेद पताकाएं फहरा रही हैं। शांति कपोतों का मोल बढ़ गया। अपने दोनों हाथों से उन्हें किसी मंच से उड़ाओगे, तो उस मंच की अभ्यर्थना कर रही हजारों की भीड़ गदगद हो जाएगी। लोग लिबास बदलने की तरह अपने मूल्य और आदर्श बदल रहे हैं। इनसानों की बस्तियां जलाने वाले लोग अब फायर ब्रिगेड के जांबाज कर्मचारी बन आग पर पानी की बौछार करते नजर आते हैं। अरे यही तो थे जो कल इस जलती हुई आग पर तेल डालने का काम कर रहे थे, और इसे अपना पुण्य कर्म बता रहे थे। अमानवीयता का सैलाब गुजर गया। पीछे घोंघे, पत्थर, कूड़ा-कर्कट ही नहीं छोड़ गया, कुछ सरकटी लाशें भी छोड़ गया। अजब मंजर था वह। लोग तिरंगे फहरा कर, भारत माता की जय चिल्लाते हुए एक-दूसरे की पीठ में छुरे घोंप रहे थे। अब जब मुखौटा बदलने का वक्त आया तो लोग एक-दूसरे की पीठ थपथपा कर घायलों के जख्मों पर मरहम लगाते देखे जा रहे हैं। दंगों का सैलाब गुजर गया, अब सम्मान पत्र बांटने वाले, या अपना अभिनंदन स्वयं ही करवा लेने वाले सामने आ रहे हैं, कि देखो बंधु, हमने दंगों की इस पीड़ा को अपने बदन पर नहीं, बल्कि अपनी आत्मा पर झेला है। इसीलिए तो फसाद और खून के उन दिनों में हमने घिरे हुए अभागों की भूख-प्यास की सुध ली। उनके अटूट लंगर की कड़ी को टूटने नहीं दिया। हम उन्हें अपनी पीठ थपथपाते हुए देखते रहे कि हां, उत्पाती दिनों में इन लोगों ने दस रुपए की पानी की बाल्टी बीस रुपए में बेची है। वे मुंह मांगी कीमत प्राप्त कर सके, इसके लिए यह भी हो सकता है कि उन अशांत दिनों में उन्होंने पानी की आपूर्ति खुद ही बाधित कर दी हो। अब कारवां गुजर जाने के बाद उसके गुब्बार को पछाड़ने के लिए, जल आपूर्ति से लेकर भूख आपूर्ति तक करते हुए अब समय सारथी बन हर तरह की प्रवंचना से जूझ जाने का संदेश दे रहे हैं। एक चेहरे पर समयानुसार दूसरा चेहरा लगा लेना, और अपनी पीठ खुद ही थपथपा अपने आपको क्रांतिवीर घोषित कर देने का यह उद्घोष हम हर क्षेत्र और हर समय में देखते-सुनते आ रहे हैं। इन दिनों इसका रिवाज कुछ अधिक हो गया है, क्योंकि सुना है जो असल हकदार थे, वे तो इस पहचान और अभ्यर्थना के मेले में लुट गए साहिब, और तमाशबीन दुकानें सजा कर बैठ गए, जहां आपके लिए पुरस्कार से लेकर सम्मान पत्र तक सब नीलाम हो रहे हैं। आधी रात को 'खून का बदला खून' चिल्लाने वाले शूरवीर सुबह होते ही सूरजमुखी बन कर शांति का सूरज उगा देने के पैरोकार बन गए, क्योंकि यह बात तो उनके बड़े-बूढ़े पहले ही बता गए थे, कि बरखुरदार गंगा जाओ तो गंगाराम बन जाओ, और जमना जाओ तो जमना दास बनने की घोषणा कर दो। कालांतर में यह समझ उन्हें दलबदलू बनने की प्रेरणा देती है। अपनी टोपी बदल कर वे कभी शर्मिंदा न हुए, बल्कि इसे आत्मावलोकन कह अपनी समझ का नया पड़ाव हमें समझा इसे न्यायसंगत ठहरा गए। आजकल दलबदलू कानून भी उनका अवरोध नहीं कर पाते। गठजोड़ संस्कृति आ गई है। लोग एक-दूसरे के विरुद्ध कीचड़ उछालते हुए चुनाव लड़ते हैं, बाद में सत्ता पर कब्जा जताने के लिए एक-दूसरे के साथ गठजोड़ करते हुए उन्हें कोई हिचकिचाहट नहीं होती। अलग-अलग दर्शनों से प्रतिबद्धता जताने वाले भी कितनी जल्दी एक न्यूनतम सांझा कार्यक्रम पर पहुंच जाते हैं, और अपने-अपने हिस्से की विजयमाला बांट करके पहन लेते हैं। फिर अपने सत्ता ग्रहण को एक नई क्रांति की शुरुआत घोषित कर देते हैं।

कैसी होगी दूसरे कार्यकाल में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की विदेश नीति?

निरंजन मार्जनी

डोनाल्ड ट्रम्प दूसरी बार अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए हैं। लगभग सारे चुनावी सर्वेक्षण और अनुमानों को ग़लत साबित करते हुए ट्रम्प ने अपनी प्रतिद्वंदी और अमेरिका की वर्तमान उपराष्ट्रपति कमला हैरिस को पीछे छोड़ते हुए अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव में जीत हासिल की।

दुनिया की महासत्ता होने के कारण अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव का असर पूरी दुनिया की राजनीति और अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। ऐसे में अमेरिका की विदेश नीति का रुख भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे विश्व व्यवस्था भी प्रभावित होती है। ट्रम्प की विदेश नीति क्या रह सकती है यह समझना ज़रूरी है।

राष्ट्रपति का चुनाव जीतते ही ट्रम्प को अलग अलग देशों के नेताओं की तरफसे बधाई संदेश भेजे गए। ट्रम्प ने कुछ नेताओं से फ़ोन पर भी बात की। जिन नेताओं से ट्रम्प ने सबसे पहले बात की उनमें भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतान्याहू और सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान शामिल थे। इस बातचीत के मायने भी विदेश नीति की दृष्टि से देखते हैं।

मोदी के साथ बात करना भारत और अमेरिका के मज़बूत रिश्तों को दर्शाता है। ट्रम्प के पहले कार्यकाल में भारत-अमेरिका संबंध मज़बूत हुए इसकी एक वजह थी मोदी और ट्रम्प की व्यक्तिगत मित्रता। दोनों नेता एक दुसरे को अपना दोस्त कहते हैं। हालांकि कूटनीति राष्ट्रहित को ध्यान में रखकर की जाती है लेकिन ऐसी व्यक्तिगत मित्रता भी कई बार महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ट्रम्प के दुसरे कार्यकाल में भी भारत से अमेरिका के दृढ संबंधों की अपेक्षा है। इसका मतलब है की भारत और अमेरिका के बीच सामरिक रिश्ते और आगे बढ़ सकते हैं। चीन की चुनौती का मुक़ाबला करने में भारत को अमेरिका का सहयोग मिल सकता है। पाकिस्तान के साथ अमेरिका के रिश्तों पर भी ट्रम्प पुनर्विचार कर

सकते हैं। आतंकवाद के ख़िलाफ़ पहले भी ट्रम्प भारत का समर्थन और पाकिस्तान का विरोध कर चुके हैं। हाल ही में चुनाव प्रचार के दौरान ट्रम्प ने बांग्लादेश में हिन्दुओं के ख़िलाफ़ हो रही हिंसा की खुलकर आलोचना की थी। इस्लामिक आतंकवाद के विरुद्ध भारत की लड़ाई में ट्रम्प भारत के पक्ष में रहेंगे। सुरक्षा के अलावा कूटनीति में भी विश्व स्तर पर भारत को संतुलन बनाए रखने की कवायद कम करनी पड़ सकती है। रूस-यूक्रेन युद्ध के चलते भारत को रूस और पश्चिमी देशों से अपने रिश्ते सामान्य रखने के लिए काफ़ी प्रयास करने पड़ रहे हैं। रूस और रुसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के प्रति ट्रम्प का रुख बाइडेन प्रशासन जितना सख़्त नहीं है। चुनाव प्रचार के दौरान ट्रम्प ने रूस-यूक्रेन युद्ध में दोनों पक्षों की सहमति से समाधान खोजने की बात कही थी।

साथ ही नेतन्याहू और मोहम्मद बिन सलमान से बात करना भी ट्रम्प की आगामी नीति के संकेत हैं। अमेरिका की विदेश नीति में इस्राएल को पारंपारिक रूप से दशकों से सैन्य और आर्थिक समर्थन मिलता आ रहा है। लेकिन जो बाइडेन के कार्यकाल में अमेरिका में इस्राएल-हमास युद्ध में हमास और फ़िलिस्तीन को भी इजरायल के ख़िलाफ़ काफ़ी समर्थन मिला है। लेकिन अब ट्रम्प के कार्यकाल में फ़िलिस्तीन और हमास पर अमेरिका का रुख कड़ा रह सकता है। उसी तरह सऊदी अरब से भी अमेरिका अपने करीबी रिश्तों को स्थिर रखना चाहेगा। अपने पहले कार्यकाल में ट्रम्प ने पश्चिम एशिया में कोई भी युद्ध शुरू नहीं किया था। बल्कि अमेरिका की मध्यस्थता से चार अरब देशों के इस्राएल के साथ कूटनीतिक संबंध प्रस्थापित हुए थे । अगर ट्रम्प रूस-यूक्रेन युद्ध और इजरायल-हमास युद्ध को ख़त्म करते हैं तो यह उनकी विदेश नीति की एक बड़ी सफलता होगी।

एक दिलचस्प बात यह है की राष्ट्रपति का चुनाव जीतते ही ट्रम्प ने जिन देशों के नेताओं से बात की, उनमें कोई भी यूरोपीय देशों के नेता नहीं थे। इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है की ट्रम्प की यूरोप के प्रति नीति उनके पहले कार्यकाल जैसी ही होगी। 2016 से 2020 तक के अपने कार्यकाल में यूरोपीय देशों से ट्रम्प के रिश्ते बहुत अच्छे नहीं थे। यूरोपीय देशों ने अपनी सुरक्षा की ज़िम्मेदारी खुद उठानी चाहिए और अमेरिका पर हर वक़्त निर्भर नहीं रहना चाहिए यह ट्रम्प की नीति रही है। साथ ही जो यूरोपीय देश नाटो के सदस्य हैं वे नाटो में पर्याप्त आर्थिक योगदान न देने की वजह से भी ट्रम्प यूरोपीय देशों से नाराज़ रहे हैं। अगर ट्रम्प यूरोप को समर्थन देना बंद करते हैं तो अपने आप यूक्रेन को मिलने वाली आर्थिक और सैन्य मदद में भी कमी आएगी जिससे रूस-यूक्रेन युद्ध के समाप्त होने के आसार बढ़ सकते हैं।

हालांकि यह जानना भी आवश्यक है की ट्रम्प एक ऐसे व्यक्ति हैं जो कूटनीति में व्यापारिक दृष्टिकोण रखते हैं। एक उद्योगपति होने के कारण ट्रम्प हमेशा लाभ और हानि के नज़रिये से ही विदेश नीति को देखेंगे। अपने पहले कार्यकाल में भी ट्रम्प इसी नीति के लिए जाने जाते थे। इसका असर दक्षिण पूर्व एशिया, पूर्व एशिया और प्रशांत महासागर क्षेत्र पर पड़ सकता है। यूरोपीय देशों की तरह ट्रम्प दक्षिण कोरिया, जापान और ऑस्ट्रेलिया को भी सुरक्षा मामलों में आत्मनिर्भर होने के लिए कह सकते हैं। इससे इस क्षेत्र में चीन की गतिविधियों पर नियंत्रण पाना मुश्किल हो सकता है।

ट्रम्प की जीत को अमेरिका में ही नहीं, पूरी दुनिया में एक उलटफेर के तौर पर देखा जा रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है की ट्रम्प के दूसरे कार्यकाल में विश्व व्यवस्था में भी काफ़ी बदलाव हो सकते हैं।

तुलसी विवाह: प्रकृति और ईश्वर का पावन मिलन

हिंदू धर्म की अनमोल परंपराओं में तुलसी विवाह का विशेष स्थान है। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी या द्वादशी को मनाया जाने वाला यह पावन पर्व प्रकृति और परमात्मा के दिव्य मिलन का प्रतीक है। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि मानव जीवन के लिए एक गहरा संदेश है, जो हमें प्रकृति के साथ तालमेल बिठाने की प्रेरणा देता है। तुलसी विवाह की पौराणिक कथा अत्यंत रोचक और शिक्षाप्रद है। प्राचीन ग्रंथों में वर्णित है कि तुलसी पूर्व जन्म में वृंदा नाम की एक पतिव्रता स्त्री थीं। जलंधर नामक असुर की पत्नी होने के कारण, उनकी पवित्रता और सती धर्म ही जलंधर की अजेयता का कारण था। देवताओं की सहायता के लिए भगवान विष्णु ने जलंधर का रूप धारण कर वृंदा के साथ छल किया। इस छल के कारण जलंधर का वध संभव हुआ, परंतु जब वृंदा को इस छल का पता चला, तो उन्होंने भगवान विष्णु को शाप दिया कि वे पत्थर बन जाएंगे। यही शाप शालिग्राम के रूप में प्रसिद्ध हुआ। तत्पश्चात वृंदा ने कठोर तपस्या की और भगवान विष्णु ने उन्हें वरदान दिया कि वे तुलसी के रूप में पूज्य होंगी और उनका विवाह स्वयं भगवान विष्णु से होगा।

तुलसी विवाह में प्रतीकात्मक रूप से जो विधि-विधान किए जाते हैं, वे गहरे आध्यात्मिक अर्थ रखते हैं। मंडप की स्थापना से लेकर विवाह के सभी रीति-रिवाज पारंपरिक विवाह की भांति संपन्न किए जाते हैं। शालिग्राम के रूप में विष्णु और तुलसी के विवाह में मंत्रोच्चार, फेरे, और कन्यादान जैसी सभी विधियां की जाती हैं। यह अनुष्ठान प्रकृति और ईश्वर के अटूट संबंध का प्रतीक है।

समाज में तुलसी विवाह का विशेष महत्व है। यह पर्व समाज को एकजुट करने का माध्यम बनता है। इस अवसर पर पूरा परिवार और समुदाय एकत्र होता है। महिलाएं विशेष रूप से इस उत्सव में भाग लेती हैं और पारंपरिक गीत गाती हैं। यह त्योहार सामाजिक एकता और सांस्कृतिक विरासत को संजोने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तुलसी का पौधा न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसके औषधीय गुण भी अद्भुत हैं। तुलसी में प्राकृतिक एंटीबायोटिक गुण पाए जाते हैं। यह रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है। श्वास संबंधी रोगों में तुलसी विशेष लाभदायक है। तुलसी का सेवन तनाव को कम करने में सहायक होता है। वायु को शुद्ध करने की क्षमता के कारण घरों में तुलसी का पौधा लगाना स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है।

वर्तमान समय में जब प्रदूषण और पर्यावरण असंतुलन एक गंभीर समस्या बन गए हैं, तुलसी विवाह की परंपरा पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती है। तुलसी का पौधा पर्यावरण को संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह मिट्टी की उर्वरता बढ़ाता है, कीटों को प्राकृतिक रूप से नियंत्रित करता है और वायु को शुद्ध करता है।

आधुनिक युग में तुलसी विवाह की परंपरा नए रूप में विकसित हुई है। शहरी क्षेत्रों में यह समारोह सरल रूप में मनाया जाता है। कई स्थानों पर सामूहिक तुलसी विवाह का आयोजन किया जाता है। महामारी के दौरान इस परंपरा को डिजिटल माध्यम से भी निभाया गया। यह दर्शाता है कि कैसे प्राचीन परंपराएं समय के साथ अनुकूलित होकर भी अपना मूल महत्व बनाए रखती हैं।

तुलसी विवाह से हमें कई महत्वपूर्ण जीवन मूल्य सीखने को मिलते हैं। यह हमें प्रकृति के प्रति सम्मान, समर्पण का महत्व, और धैर्य का पाठ सिखाता है। वृंदा का चरित्र हमें सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों में भी आत्मविश्वास नहीं खोना चाहिए। उनका तपस्वी जीवन प्रेरणा का स्रोत है।

वर्तमान जीवनशैली में तुलसी विवाह के अनेक लाभ हैं। यह परिवार को एकजुट करने का अवसर प्रदान करता है। बच्चों को सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित कराता है। समाज में सामूहिक भावना को बढ़ावा देता है। पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाता है। आयुर्वेदिक चिकित्सा और प्राकृतिक जीवन शैली को प्रोत्साहित करता है।

तुलसी विवाह हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक अमूल्य हिस्सा है। यह परंपरा धार्मिक, सामाजिक, पर्यावरणीय और स्वास्थ्य संबंधी अनेक लाभों का संगम है। आज के समय में जब मानव प्रकृति से दूर होता जा रहा है, यह परंपरा हमें प्रकृति के करीब लाने और उसके महत्व को समझने में सहायक है। यह हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश है कि प्रकृति और परमात्मा के प्रति श्रद्धा ही मानव जीवन की सार्थकता है।

तुलसी विवाह की यह पावन परंपरा न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत रखती है, बल्कि आधुनिक चुनौतियों के समाधान में भी मार्गदर्शक की भूमिका निभाती है। यह हमें सिखाती है कि विकास के साथ-साथ अपनी जड़ों से जुड़े रहना कितना महत्वपूर्ण है। आने वाले समय में भी इस परंपरा की प्रासंगिकता बनी रहेगी और यह नई पीढ़ी को प्रेरणा देती रहेगी।

- वासवी राजू बरडे

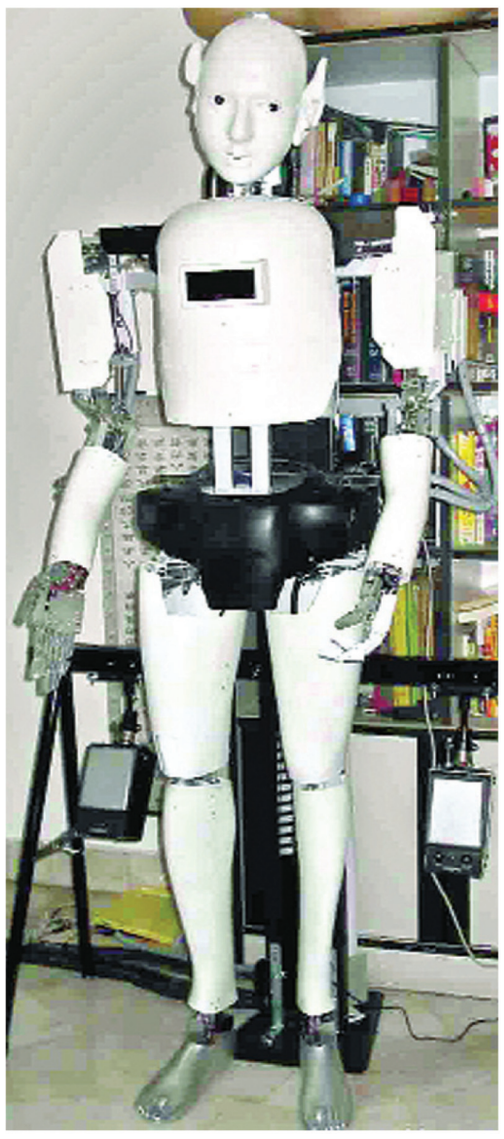

बुजुर्गों का ख्याल रखेगा स्पेशल रोबोट

आजकल की भागती-दौड़ती जिंदगी में सबसे ज्यादा उपेक्षित होते हैं बुजुर्ग। शहरों की जीवनशैली में उम्र भर खुद को एडजस्ट कर लेते हैं, लेकिन जीवन के आखिरी पड़ाव में अपने ही बच्चों की उपेक्षा और कई बार व्यस्तता से वह खुद को बेहद असमर्थ महसूस करने लगते हैं। विज्ञान और तकनीक ने ऐसे बुजुर्गों का ख्याल रखने के लिए एक रोबोट बनाया है।

बेहद मददगार

न्यूजीलैंड की कम्पनी द्वारा तैयार यह रोबोट बुजुर्गों के लिए बेहद मददगार है। यह रोबोट उन्हें समय पर दवाई खाने के अलावा उनकी और जरूरी चीजों याद रख उन्हें पूरी करने में पूरी तरह सक्षम साबित होगा। ये रोबोट सिर्फ ख्याल ही नहीं रखेगा, बल्कि बुजुर्गों का मनोरंजन भी करेगा। इसके अलावा यह उन्हें चहलकदमी कराने और व्यायाम कराने के लिए भी प्रेरित करेगा।

कुंग फू फुंग गेम

मनोरंजन के लिए क्राइस्ट चर्च की गेमिंग कम्पनी स्टिकमेन स्टूडियोज ने बुजुर्गों को ध्यान में रखकर कुंग फू फुंग नाम का एक गेम तैयार किया है। इस गेम की मदद से मस्तिष्क घात से पीड़ित लोगों को व्यायाम के जरिए स्वस्थ बनाए रखने का प्रयास किया जाएगा। इस कम्पनी ने ऑकलैंड विश्वविद्यालय के साथ किए गए एक करार के तहत इस रोबोट को गेमिंग सुविधाओं से लैस किया है।

चलायमान रखेगा

इस सुविधा से लैस होने के बाद यह रोबोट बुजुर्गों को दोपक्षीय खेलों की मदद से चलायमान बनाए रखेगा। एल्डरकेयर नाम के इस रोबोट का विकास दक्षिण कोरिया की कम्पनी इलेक्ट्रानिक एंड टेलीकम्यूनिकेशंस रिसर्च इंस्टीट्यूट के इंटेलीजेंट रोबोट डिवीजन की मदद से तैयार किया गया है।

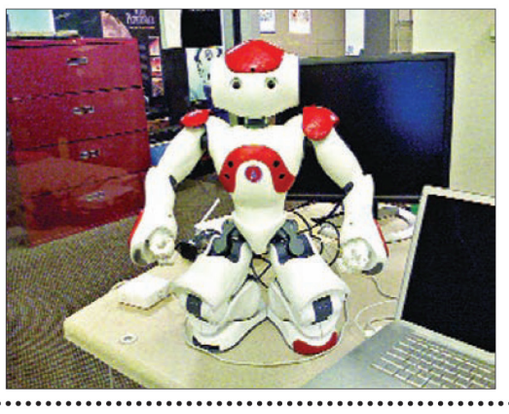

प्रमस्तिष्क पक्षाघात से संभलकर रहें

बच्चों का शौक हर शादीशुदा जोड़ों को होता है। लेकिन जब उसके लालन-पालन की बात आती है तो मम्मी-पापा के पसीने छूटने लगते हैं। मतलब बच्चे पालना बच्चों का खेल नहीं है। परिजनों के ध्यान नहीं देने के कारण बच्चों में प्रमस्तिष्क पक्षाघात और लर्निंग डिसएबिलिटी के आंकड़े भयावह होते जा रहे हैं। प्रमस्तिष्क पक्षाघात जैसे विकार जीवन के प्रारंभ में शुरू होते हैं तथा ये मस्तिष्क में चोट लगने या जन्म से पहले मस्तिष्क विकास में गड़बड़ी आने के परिणामस्वरूप होते हैं।

बता दें कि प्रमस्तिष्क पक्षाघात मस्तिष्क के उन भागों के क्षतिग्रस्त होने से होता है, जो कि पेशियों तथा उनकी क्रियाओं को नियंत्रित करते हैं। मस्तिष्क में क्षति कई कारणों से हो सकती है, यथा गर्भावस्था में गड़बड़ी, संक्रमण, आघात, जीन संबंधी परेशानियां, ऑक्सीजन की कमी, गंभीर पीलिया या रोग जिनके कारण मस्तिष्क का असामान्य विकास होता है।

पक्षाघात के प्रकार

1) संस्तंभी/आकर्षी/ऐंठन युक्त : (ऐंठन, कष्टमय क्रिया)
2) वलन/धीमी गति : (गतिविधि पर नियंत्रण ना होना)
3) गति विभ्रम : (तालमेल व संतुलन ना होना)
4) मिश्रित : (उपरोक्त तीन प्रकारों का मिश्रणद्ध

- **संस्तंभी/आकर्षी प्रमस्तिष्क पक्षाघात**-यह सबसे ज्यादा प्रचलित प्रकार हैं (लगभग 50 प्रति.) जिसमें हाथ-पैर संस्तंभी होते हैं अर्थात उनमें अकड़न होती है तथा वे फैलाने या मोड़ने के प्रतिरोधी होते हैं। व्यक्ति में ये लक्षण सोते या जागते दोनों समय पाए जाते हैं।
- वलन प्रमस्तिष्क पक्षाघात-यह प्रमस्तिष्क पक्षाघात का कम प्रचलित प्रकार है (लगभग 20 प्रति.) यह चेहरे, छड़ तथा हाथ-पैर की अनियंत्रित क्रियाओं जो बोलने तथा स्तनपान में बाधा डालती हैं, से पहचाना जाता है। भावनात्मक तनाव के समय ये लक्षण बिगड़ने लगते हैं तथा सोने पर वर्ग-सुलभ हो जाते हैं। क्रियाएं तेज व झटके वाली होती हैं या असामान्य परिस्थिति में ही रह जाने वाली होती हैं।
- गति विभ्रम प्रमस्तिष्क पक्षाघात-यह प्रकार भी इतना प्रचलित नहीं है तथा सामान्यतया इसमें मस्तिष्क के उस भाग पर चोट लग जाती है, जो समन्वय के लिए उत्तरदायी होता है, जिसे अनुमस्तिष्क कहते हैं। इसके विशिष्ट लक्षण हैं- धड़ का डगमगाना, परेशानी करने वाले हाथ-पैर का स्थिर रहना, आंखों का असामान्य घूमना।
- मिश्रित प्रमस्तिष्क पक्षाघात- उपरोक्त में से कम से कम दो प्रकारों के लक्षणों का संयोजन।

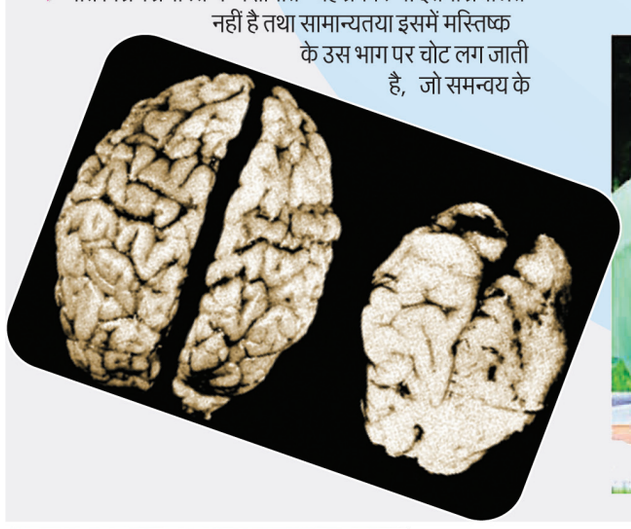

ये परेशनियां हो सकती हैं : 1. मानसिक मंदता, 2. दौरे पड़ना तथा तंत्रिका तंत्र के अन्य विकार, 3. देखने या सुनने में परेशानी।

उपचार : चिकित्सक, चिकित्सकीय तथा विकास के इतिहास का, गर्भावस्था तथा प्रसव के इतिहास, माता द्वारा ली गई चिकित्सा, माता में हुए संक्रमण तथा भ्रूण की हलचल का विस्तृत अध्ययन करता है। पारिवारिक इतिहास, माता के गर्भपात का इतिहास तथा किसी रिश्तेदार में इसी प्रकार की स्थिति का अध्ययन मददगार हो सकता है। चिकित्सक बच्चे का परीक्षण करता है तथा उसके दृश्य व श्रव्य जांच के आदेश देता है। कुछ अतिरिक्त परीक्षण भी करवाए जा सकते हैं।

प्रारंभिक लक्षण

- **स्तनपान में परेशानी** : प्रमस्तिष्क पक्षाघात पीड़ित बच्चों में चूसने तथा निगलने की क्रिया में सामंजस्य की कमी देखी जाती है। विकास चिन्हों का देरी से नजर आना- जैसे बैठने, खिसकने या चलने की शुरुआत होने की सामान्य उम्र में प्रमस्तिष्क पक्षाघात पीड़ित बच्चे ये क्रियाएं नहीं कर पाते।
- **ढीलापन या अकड़न** : प्रमस्तिष्क पक्षाघात पीड़ित कुछ बच्चों में पेशी तनाव कम होता है, जिससे उन्हें हाथ ऊपर उठाने या सीधा बैठने में मुश्किल होती है। कुछ में पेशी तनाव अधिक होने से उनकी भुजाएं व पैरों में अकड़न आ जाती है। नवजात में पैरों का कैंची स्वरूप होना पेशी में अकड़न को दर्शाता है।
- **संतुलन में परेशानी** : प्रमस्तिष्क पक्षाघात वाले बच्चे बहुत भद्दे से लगते हैं या उन्हें हाथों व पैरों से जो वो चाहते हैं, वैसा कर पाने में परेशानी होती है।

डर्मेटोफायब्रोम है खतरनाक

डर्मेटोफायब्रोमा एक गैर कैंसर युक्त त्वचा पर ढेले बना देती है, जिससे मरीज को बार-बार खुजली होने लगती है। यह शरीर में कहीं भी हो सकती है। इस बीमारी से सावधान रहने की जरूरत है।

यह बीमारी वयस्कों में आम होते ही हैं पर बच्चों में यह कभी-कभी हो जाती है। यह ढेले गुलाबी लाल या भूरे रंग के हो सकते हैं और सालों में अपना रंग बदल सकते हैं। यह सख्त होते हैं और त्वचा के नीचे एक पत्थर की तरह होते हैं। जब बगल से इनको नोचा जाएगा तो उपज का शिखर अंदर की तरफ घुस जाएगा। डर्मेटोफायब्रोमा प्राय : दर्दहीन होते हैं, लेकिन कुछ लोगों में कोने पर दर्द या खुजली हो सकती है। सबसे ज्यादा एक अकेला ढेला बन जाता है। लेकिन कुछ लोगों में कई डर्मेटोफायब्रोमा हो सकते हैं।

- डर्मेटोफायब्रोमा होने पर डॉक्टर को दिखाएं।
- डर्मेटोफायब्रोमा गैर कैंसरयुक्त बीमारी है।
- डर्मेटोफायब्रोमा का पता धीरे-धीरे लगता है।

डर्मेटोफायब्रोमा का पूर्वानुमान :
डर्मेटोफायब्रोमा गैर कैंसरीय उपज होती है और ढेले कैंसर नहीं बनने देते हैं।

बीमारी की चिकित्सा

डर्मेटोफायब्रोमा दुर्लभ रूप से उपचार की जरूरत होती है। कुछ लोग अपने डर्मेटोफायब्रोमा को हटाना फायदेमंद समझते हैं, क्योंकि अगर उसकी उपज किसी न चाहने वाली जगह पर हो (जैसे की उस जगह जो कि बार बार शेव करते वक्त या कपड़े पहनते वक्त खुजली हो जाए) या वो दर्द भरी या खुजली करती हो, क्योंकि एक डर्मेटोफायब्रोमा गहरा उग सकता है। उसको हटाने के लिए उसको त्वचा की सतह के नीचे से हटाना होता है। यह प्रक्रिया कठिन होती है। एकांतर रूप से ढेले को त्वचा की सतह के समान समतल कर देते हैं, जो कि उसके शिखर को शल्य चिकित्सा वाले चाकू से काट देते हैं, लेकिन यह सिर्फ डर्मेटोफायब्रोमा की ऊपरी सतह ही हटाता है और गहरी सतह को छोड़ देता है, ताकि कुछ सालों बाद ढेला फिर से उग सके। बहुत दुर्लभ रूप में एक त्वचा का कैंसर जो कि शुरू शुरू में डर्मेटोफायब्रोमा की तरह दिखता है, वह फैल सकता है। यह त्वचा का कैंसर का एक लंबा नाम है, जिसे डर्मेटोफायब्रोमा सार्कोमा प्रोत्युब्रेंस (दिएफेस्पी) कहते हैं।

डॉक्टर को कब सम्पर्क करें

अगर आपके पैर में ठेठ है तो भी उसे गंभीरता से लें। ठेठ ज्यादा बढ़ जाने पर यह गंभीर रूप धारण कर लेती है। कई बार हम लापरवाही कर जाते हैं, और ठेठ बढ़ती रहती है जिससे कभी-कभी खून भी निकल आता है। कई लोग घरेलू उपचार के माध्यम से ठीक कर लेते हैं, लेकिन डॉक्टर से परामर्श जरूर लेना चाहिए।

रोग के प्रमुख लक्षण

डर्मेटोफायब्रोमा धीरे धीरे विकसित होते हैं। यह छोटे सख्त और त्वचा की उठी हुई उपज होती है।

- प्राय : निचले पैरों में आती है, पर हाथ और पीठ में भी आ सकती है।
- यह लाल, गुलाबी बौन्लनी या भूरे भी हो सकते हैं और समय के साथ अपना रंग भी बदल सकती है।
- यह बीबी प्लेट की तरह छोटी भी हो सकती है, लेकिन दुर्लभ रूप से ऊंगली के नाखून से शायद ही बड़ी होती है।
- यह प्राय : दर्दहीन होते हैं, लेकिन छोने पर दर्द, या खुजली भी हो सकती है।
- जब इनको खुजलाया जाए, तो यह अंदर की तरफ घुस जाते हैं।

संक्षिप्त समाचार

धमतरी पुलिस,चौकी बिरेझर द्वारा अवैध रुप से शराब बेचने वाले आरोपी के विरुद्ध की गई वैधानिक कार्यवाही

आरोपी से कुल 10 पौवा देशी मशाला शराब कीमती 1100/-रुपये, बिक्री रकम 240/-रुपये,जुमला 1,340/-रूपये जप्त कर,धारा 34 (1)(ख)आब0एक्ट के तहत की गई कार्यवाही

धमतरी पुलिस द्वारा लगातार अवैध शराब बेचने वालों के विरुद्ध अभियान चलाकर की जा रही है वैधानिक कार्यवाही

ब्यूरों सैय्यदा मुनीज़ा हुसैनी धमतरी छत्तीसगढ़। संक्षिप्त विवरण-: धमतरी पुलिस चौकी बिरेझर को मुखबिर के सूचना मिली की एक व्यक्ति द्वारा मुल्हे नहर पुलिया के पास अवैध रूप से शराब रखकर बिक्री कर रहा हैं की सूचना के आधार पर शराब रेड कार्यवाही कर आरोपी पुनित कोठारे पिता संतानु कोठारे उम्र 34 वर्ष साकीन मुल्हे के कब्जे से थैले के अंदर 10 पौवा देशी मशाला कीमती 1100/- रूपये एवं बिक्री रकम 240/- रूपये जुमला कीमती 1340/- रूपये को जप्त कर आरोपी के विरूद्ध चौकी बिरेझर, थाना कुरूद में अप0 क्र0 481/24 धारा 34 (1)(ख) आबकारी एक्ट के तहत वैधानिक कार्यवाही किया गया है।

आरोपी का नाम-: पुनित कोठारे पिता संतानु कोठारे उम्र 34 वर्ष साकीन मुल्हे,चौकी बिरेझर,थाना कुरुद धमतरी, जिला-धमतरी (छ0ग0)सम्पूर्ण कार्यवाही में चौकी बिरेझर से प्रआर. शेषनारायण पांडेय आर.गिरीश मिश्रा,सागर मिश्रा का विशेष योगदान रहा।

जनदर्शन में कलेक्टर सुश्री नम्रता गांधी ने सुनीं लोगों की समस्या, शिकायत और मांग

प्राप्त पत्रों को निराकरण करने के अधिकारियों को दिए निर्देश

ब्यूरों सैय्यदा मुनीज़ा हुसैनी धमतरी छत्तीसगढ़। धमतरी/ कलेक्टर सुश्री नम्रता गांधी ने आज जिले के दूर-दराज से पहुंचे लोगों की समस्या, शिकायत और मांग संबंधी आवेदनों को बारी-बारी से प्राप्त किया तथा इन प्रकरणों का समय सीमा में निराकरण करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। जनदर्शन में आज स्कूल में बोर खनन, फौती प्रकाशन, आधार नंबर सुधरवाने, त्रुटि सुधार, मुआवजा दिलाने, वार्ड परिसीमन कराने, आबादी जमीन दिलाने, सीसी रोड निर्माण, आर्थिक सहायता प्रदाय करने इत्यादि संबंधी आवेदन प्राप्त हुए।

आयुष्मान कार्ड का घर-घर किया जा रहा पंजीयन

मुंगेली/ कलेक्टर श्री राहुल देव के निर्देशानुसार जिले में स्वास्थ्य विभाग द्वारा घर-घर जाकर आयुष्मान कार्ड बनाने पंजीयन किया जा रहा है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. प्रभात चंद्र प्रभाकर ने बताया कि शासन की महत्वाकांक्षी आयुष्मान भारत योजना से आम लोगों को लाभान्वित करने स्वास्थ्य कर्मचारियों आर.एच.ओ, सी.एच.ओ, मितानिनों एवं आयुष्मान ऑपरेटरों द्वारा घर-घर जाकर आयुष्मान कार्ड पंजीयन का कार्य किया जा रहा है।

जिले में 08 लाख ग्यारह हजार 641 आयुष्मान कार्ड बनाने का लक्ष्य प्राप्त हुआ है। इसमें 07 लाख 09 हजार 788 हितग्राहियों का कार्ड बनाया जा चुका है, जो लक्ष्य का 88 प्रतिशत है। उन्होंने बताया कि जिले में 33 शासकीय एवं 06 निजी चिकित्सालयों सहित कुल 39 चिकित्सालयों में आयुष्मान कार्ड से ईलाज की सुविधा उपलब्ध है। इन अस्पतालों में भर्ती मरीज आयुष्मान कार्ड से अपना उपचार करा सकते है। जिले में लगभग 01 लाख 19 हजार 439 हितग्राही आयुष्मान योजना का लाभ ले चुके हैं।

कलेक्टर एवं एसपी ने जनदर्शन में सुनी आमजनों की समस्याएं, संबंधित अधिकारियों को नियमानुसार निराकरण के दिए निर्देश

श्री फूलसिंह यादव को प्रदान किया श्रवण यंत्र

मुंगेली (समय दर्शन)। जिला कलेक्टोरेट में आयोजित जनदर्शन में कलेक्टर श्री राहुल देव एवं पुलिस अधीक्षक श्री भोजराम पटेल ने आमलोगों की मांगों एवं समस्याओं को गंभीरता से सुना और संबंधित अधिकारियों को नियमानुसार निराकरण के निर्देश दिए। इस दौरान मुंगेली विकासखण्ड के ग्राम भठली के वरिष्ठ नागरिक श्री फूलसिंह यादव ने श्रवण यंत्र की मांग की। जिस पर कलेक्टर ने समाज कल्याण विभाग के अधिकारी को निर्देशित कर श्री यादव को तत्काल श्रवण यंत्र प्रदान किया। इसके साथ ही 03 लोगों को अंतरजातीय विवाह प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत चेक प्रदान किया। इसी प्रकार हथनीकला के पैराशूटर श्री सोमेश सिंह ने महाराणा प्रताप खेल परिसर में ट्रैक निर्माण, लाइटिंग व्यवस्था और मैदान समतलीकरण की मांग की। इस पर कलेक्टर ने आरईएस और खेल विभाग के अधिकारी को स्थल पर जाकर अवलोकन कर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए। इस दौरान मुंगेली अपर कलेक्टर श्रीमती निष्ठा पाण्डेय तिवारी, जिला पंचायत सीईओ श्री प्रभाकर पाण्डेय, एसडीएम श्रीमती पार्वती पटेल, डिप्टी कलेक्टर श्री अजय शतरंज सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

जनदर्शन में प्राप्त हुए 129 आवेदन- जनदर्शन में कुल 129 आवेदन प्राप्त हुए, जिनमें ग्राम भर्राकुण्डा के ग्रामीणों ने जल जीवन मिशन योजनांतर्गत स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने, ग्राम भठलीखुर्द की खेदिया बाई ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन दिलाने, पृथ्वी ग्रीन कॉलोनी करही निवासी योगेश कुमार जायसवाल ने विवाह प्रमाण पत्र बनवाने, ग्राम जरहागांव के मनीराम कश्यप ने बिजली बिल में सुधार कराने, ग्राम पंचायत सेमरचुवा के सरपंच ने गॉव के प्राथमिक स्कूल भवन निर्माण करने, लोरमी विकासखण्ड के ग्राम सेनगुड़ा निवासी श्री भागवत सोनवानी ने प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ दिलाने, ग्राम मोहडंडा के भानूप्रताप पटेल ने अपने बी-1, नक्शा, खसरा को आनलाईन सुधार कराने और पथरिया विकासखण्ड के ग्राम गितपुरी के पुन्नीलाल यादव ने सौर सजला योजना का लाभ दिलाने संबंधी आवेदन कलेक्टर के समक्ष प्रस्तुत किए।

रायपुर राज्योत्सव में सम्मानित श्री रात्रे को प्रदान किया गया शाल व श्रीफल- राजधानी रायपुर में 04 से 06 नवंबर को आयोजित राज्योत्सव कार्यक्रम में उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ द्वारा जिले के ग्राम मुढ़िया निवासी श्री साधेलाल रात्रे को देवदास बंजारे स्मृति पंथी नृत्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। कलेक्टर एवं एसपी ने श्री रात्रे को जनदर्शन के दौरान शाल व श्रीफल प्रदान किया और बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

आधार, आयुष्मान एवं राशन कार्ड संबंधी लगाया गया काउंटर- जनदर्शन कक्ष में आधार कार्ड, आयुष्मान कार्ड, राशन कार्ड बनाने के साथ ही धान खरीदी संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए काउंटर लगाया गया था। जिसमें आयुष्मान कार्ड, आधार कार्ड, राशन कार्ड में नाम जोड़ने एवं विलोपित करने, धान खरीदी, आवास व शौचालय आदि से संबंधित आवेदन प्राप्त हुए। सभी आवेदनों का निराकरण कर संबंधितों को राहत पहुंचाई गई। कलेक्टर एवं एसपी ने काउंटरों का अवलोकन किया और प्राप्त आवेदनों का नियमानुसार निराकरण करने के निर्देश दिए।

समर्थन मूल्य पर धान खरीदी के कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न कराने हेतु सभी तैयारियां सुनिश्चित की जाए: कलेक्टर चन्द्रवाल

समय-सीमा की बैठक में अधिकारियों को दिए निर्देश

प्राथमिकता के साथ शिक्षा ऋण स्वीकृत कराने हेतु

लीड बैंक मैनेजर को निर्देशित किया

बालोद (समय दर्शन)। कलेक्टर श्री इन्द्रजीत सिंह चन्द्रवाल ने समर्थन मूल्य पर धान खरीदी को शासन के विशेष प्राथमिकता वाले योजना बताते हुए जिले में इस कार्य को निर्विघ्न एवं सफलतापूर्वक संपन्न कराने हेतु सभी तैयारियां सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। श्री चन्द्रवाल आज संयुक्त जिला कार्यालय सभाकक्ष में आयोजित साप्ताहिक समय-सीमा की बैठक में राजस्व, खाद्य, सहकारिता एवं अन्य संबंधित विभाग के अधिकारियों को उक्ताशय के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि समर्थन मूल्य पर धान खरीदी के कार्य के अंतर्गत किसानों को अपने धान की बिक्री करने में किसी भी प्रकार की कठिनाई नही होनी चाहिए। बैठक में श्री चन्द्रवाल ने जिले में शिक्षा ऋण के स्वीकृत प्रकरणों की भी समीक्षा की। उन्होंने जिला अग्रणी बैंक प्रबंधक को विशेष प्राथमिकता के साथ शिक्षा ऋण के प्रकरणों को स्वीकृत कर जरूरतमंद विद्यार्थियों का मदद उपलबध कराने के निर्देश दिए हैं। बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. संजय कन्नौजे, अपर कलेक्टर श्री चन्द्रकांत कौशिक एवं श्री डीआर ठाकुर सहित राजस्व अनुविभागीय अधिकारियों के अलावा अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

बैठक में श्री चन्द्रवाल ने समर्थन मूल्य पर धान खरीदी की तैयारियों की विस्तृत समीक्षा की। इसके अंतर्गत उन्होंने धान बिक्री करने वाले किसानों की पंजीयन की स्थिति, इसका समुचित प्रचार-प्रसार तथा धान खरीदी केन्द्रों की व्यवस्थाओं की भी समीक्षा की। उन्होंने सभी धान खरीदी केन्द्रों में धान बिक्री के लिए आने वाले किसानों के लिए बैठक, छांव एवं पेयजल तथा शौचालय आदि की व्यवस्था अनिवार्य रूप से सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। इसके अलावा उन्होंने सभी धान खरीदी केन्द्रों में इंटरनेट, विद्युत व्यवस्था के अलावा नमी मापक यंत्रों तथा खरीदी गए धान के समुचित रखरखाव एवं देखभाल की भी व्यवस्था सुनिश्चित कराने को कहा। उन्होंने प्रत्येक धान खरीदी केन्द्रों के लिए नोडल अधिकारियों की भी नियुक्ति करने के निर्देश दिए हैं। इसके अलावा उन्होंने राजस्व एवं संबंधित विभाग के अधिकारियों को नियमित रूप से धान खरीदी के कार्य का मॉनिटरिंग करने के निर्देश भी दिए हैं। जिससे कि केवल वास्तविक किसानों के वास्तविक रकबे की ही धान की खरीदी सुनिश्चित हो सके।

बैठक में कलेक्टर श्री चन्द्रवाल ने शिक्षा विभाग के कार्यों की समीक्षा करते हुए बच्चों के दर्ज संख्या के आधार पर स्कूलों में शिक्षकों का पदस्थापना कराने के निर्देश दिए। इसके अलावा उन्होंने सेवानिवृत्त के उपरांत स्वेच्छा से शालाओं में सेवा देने वाले सेवानिवृत्त शिक्षकों को स्वतंत्रता एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर सम्मानित कराने के निर्देश भी दिए। बैठक में कलेक्टर ने जिले में 'जल जतन अभियान' के प्रगति की भी समीक्षा की। उन्होंने इस अभियान में आम जनता की सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु निरंतर विभिन्न प्रकार के गतिविधियों का भी आयोजन कराने के निर्देश दिए। श्री चन्द्रवाल ने सहायक आयुक्त आदिवासी विकास से 15 नवंबर को आयोजित जनजातीय गौरव दिवस के आयोजन के तैयारियों के संबंध में भी जानकारी ली। उन्होंने इसके सफल आयोजन हेतु सभी तैयारियां सुनिश्चित करने तथा कार्यक्रम में जिले के गणमान्य एवं स्थानीय जनप्रतिनिधियों के अलावा आदिवासी समाज के प्रमुखों को भी आमंत्रित करने के निर्देश दिए हैं। सहायक आयुक्त आदिवासी विकास ने बताया कि शुक्रवार 15 नवंबर को विकासखण्ड मुख्यालय डौण्डी के पुलिस मैदान में जनजातीय गौरव दिवस का आयोजन किया गया है। बैठक में श्री चन्द्रवाल ने जिले में सड़कों में विचरण करने वाले घुमन्तु पशुओं के समस्याओं से निजात दिलाने हेतु किए जा रहे उपायों की भी जानकारी ली। इसके लिए उन्होंने राजस्व, पुलिस, पशुपालन विभाग के साथ-साथ नगरीय प्रशासन एवं पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारियों को पुख्ता उपाय सुनिश्चित करने को कहा।

अघरिया समाज के महासभा कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में शामिल होगें वित्त मंत्री ओपी चौधरी

अखिल भारतीय अघरिया समाज का 30 वां महासभा सिंघोंड़ा में 17 को

सरायपाली (समय दर्शन)। आगामी 17 नवंबर को मां रूद्रेश्वरी मंदिर सिंघोड़ा में अखिल भारतीय अघरिया समाज केंद्रीय समिति रायगढ़ का 30 वां महासभा का आयोजन किया गया है जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ के वित्त मंत्री ओपी चौधरी शामिल होंगे। अति विशिष्ट अतिथियों में महासमुंद लोकसभा सांसद रूप कुमारी चौधरी एवं खरसिया विधायक उमेश पटेल एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ भुनेश्वर पटेल केंद्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय अघरिया समाज रायगढ़ की उपस्थिति में कार्यक्रम संपन्न होगा।

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए हर परिक्षेत्र में बैठकों का दौर जारी है और कार्यक्रम कि रूपरेखा बनाई जा रही है, 30 वां महासभा में 16 नवंबर को कुछ घंटो के लिए आंशिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया है,जबकि मुख्य कार्यक्रम 17 नवंबर को आयोजित है। उक्त कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों में त्रिलोचन पटेल पूर्व विधायक सरायपाली,किशोर चंद्र पटेल पूर्व विधानसभा अध्यक्ष उड़ीसा,सुषमा पटेल पूर्व विधायक उड़ीसा,जवाहर नायक पूर्व विधायक सरिया,प्रकाश नायक पूर्व विधायक रायगढ़,निराकार पटेल अध्यक्ष जिला पंचायत रायगढ़,उषा पटेल अध्यक्ष जिला पंचायत महासमुंद,लक्ष्मण पटेल उपाध्यक्ष जिला पंचायत महासमुंद,भोजराज पटेल पुलिस अधीक्षक मुंगेली,रामानुज पटेल केंद्रीय संयोजक, प्रेम शंकर पटेल केंद्रीय संयोजक, दीनबंधु नायक अध्यक्ष ओडीशा शामिल होंगे, कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए केंद्रीय अध्यक्ष डॉ भुनेश्वर पटेल,केंद्रीय उपाध्यक्ष डॉ गेसमोती पटेल,केंद्रीय कोषाध्यक्ष द्वारिका पटेल,केंद्रीय महासचिव दीनदयाल पटेल एवं केंद्रीय सचिव धनंजय पटेल एवं सरायपाली क्षेत्रीय पदाधिकारी में अध्यक्ष नेहरू लाल पटेल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष जितेन्द्र पटेल, कोषाध्यक्ष? लव कुमार पटेल, केंद्रीय प्रतिनिधि नेहरू लाल चौधरी,अंचल प्रभारी विश्वनाथ नायक, सलाहकार खेमराज पटेल, तुलाराम पटेल, गोपबंधु पटेल,चैतराम पटेल,श्रीधर चौधरी, घुराऊ नायक, महिला संयोजिका सावित्री पटेल,सचिव रामेश्वर पटेल, सहित सभी परिक्षेत्रीय अध्यक्ष,समाज के पदाधिकारी एवं समस्त केंद्रीय आंचलिक पदाधिकारी जुट गए हैं।

जनजातीय गौरव दिवस की तैयारियां करें प्रारंभ-कलेक्टर सुश्री नम्रता गांधी

बाल दिवस के अवसर पर 14 नवम्बर को स्कूलों में होगा न्यौता भोज, 19 नवम्बर को बच्चे शेडो ऑफिसर के तौर पर बच्चे रहेंगे अधिकारियों के साथ

समर्थन मूल्य पर धान खरीदी 14 नवम्बर से, नोडल अधिकारी रहें अपने क्षेत्र में

ब्यूरों सैय्यदा मुनीज़ा हुसैनी धमतरी छत्तीसगढ़। धमतरी/ कलेक्टर सुश्री नम्रता गांधी ने आज समय सीमा की बैठक लेकर विभागीय गतिविधियों और प्रगति की समीक्षा की। खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 के तहत आगामी 14 नवम्बर से शुरू हो रहे समर्थन मूल्य पर धान खरीदी कार्य के सुचारू संपादन के लिए नोडल अधिकारियों को उपार्जन केन्द्र में रहना सुनिश्चित करने कहा। कलेक्टर ने बताया कि धान खरीदी कार्य सुबह 9 बजे से शुरू हो जाएगा, संबंधित अधिकारी, कर्मचारियों को समय पूर्व खरीदी केन्द्रों में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करने के निर्देश कलेक्टर ने दिए। उन्होंने कहा कि शासन की शासन के गाइडलाइन अनुसार और वास्तविक उत्पादन के आधार पर ही धान खरीदी करें। बैठक में आयुक्त नगरनिगम धमतरी सुश्री प्रिया गोयल, अपर कलेक्टर श्री जी.आर.मरकाम सहित जिला स्तरीय अन्य अधिकारी मौजूद रहे। इसके साथ ही बाल दिवस के अवसर पर 14 नवम्बर को जिले के स्कूलों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की मंशानुसार कलेक्टर ने इस दिन जिले के सभी स्कूलों में बच्चों को न्यौता भोज कराने कहा। आगामी 19 नवम्बर को स्कूलो में अध्ययनरत बच्चे शेडो ऑफिसर की भूमिका का निर्वहन करेंगे। इस दौरान बच्चे एक दिन के अधिकारी के रूप में कलेक्टर, सीईओ, पुलिस अधीक्षक, डीएफओ इत्यादि की भूमिका निभाएंगे और विभिन्न विभागों की कार्यशैली, गतिविधियों को करीब से जानने और समझने का प्रयास करेंगे, जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास तो होगा ही, साथ ही भविष्य में उनके कैरियर में भी फायदा मिलेगा। इसके मद्देनजर कलेक्टर सुश्री गांधी ने जिले के अधिकारियों को उनके दायित्वों से शेडो ऑफिसर बच्चों को अवगत कराने कहा। आगामी 15 नवम्बर को जिले के नगरी विकासखण्ड स्थित ग्राम सांकरा में जिला स्तरीय जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा, इस दौरान विभिन्न विभागीय योजनाओं एवं उपलब्धियों संबंधी स्टॉल भी लगाए जाएंगे। कलेक्टर सुश्री गांधी ने इसके लिए अधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपते हुए कार्यक्रम की तैयारियां सुनिश्चित् करने के निर्देश दिए। आगामी 13 नवम्बर को नगरी विकासखण्ड के ग्राम बेलरगांव में जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविर का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने सभी जिला स्तरीय अधिकारियों को सुबह 11 बजे उक्त शिविर में उपस्थित रहकर आमजनों की समस्या, शिकायत और मांग संबंधी आवेदनों का अधिक से अधिक निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

विधायक कार्यालय में केक काटकर मनाया गया जन्मदिन

विधायक चातुरी नंद के जन्मदिन पर हुआ विविध कार्यक्रमों का आयोजन, सीएचसी और दिव्यांग दृष्टि उड़ान दृष्टिबाधित विद्यालय में बांटे गए फल

सरायपाली(समय दर्शन)। स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर सरायपाली विधायक चातुरी नंद का जन्मदिन धूमधाम से मनाया।

विधायक नंद के जन्मदिन के अवसर पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने सबसे पहले सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सरायपाली में भर्ती मरीजों और उनके परिजनों को फल वितरण किया।

इसी प्रकार कार्यकर्ताओं द्वारा सरायपाली स्थित उड़ान दृष्टिबाधित विद्यालय में दिव्यांग बच्चों को फल वितरित कर बच्चों के साथ विधायक चातुरी नंद के जन्मदिन को यादगार बनाया। इस मौके पर दिव्यांग बच्चों ने मधुर आवाज में गीत गाकर विधायक नंद को जन्मदिन की शुभकामनाएं प्रेषित की।

विधायक कार्यालय में कार्यकर्ताओं संग विधायक नंद ने काटा केक- विधायक चातुरी नंद ने सरायपाली के बस्ती सरायपाली चौक स्थित कार्यालय में कांग्रेस कार्यकर्ताओं संग केक काटकर अपना जन्मदिन मनाया।

विभिन्न समाजिक संगठनों के पदाधिकारियों ने विधायक को दी बधाई- क्षेत्रीय विधायक चातुरी नंद को जन्मदिन की बधाई देने कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ

क्षेत्र के विभिन्न समाजिक संगठनों के पदाधिकारियो ने मुलाकात कर जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं।

भंवरपुर के कांग्रेसियों ने भी मनाया जन्मदिन- भंवरपुर क्षेत्र के कांग्रेसियों ने भी श्याम अस्पताल पहुंचकर मरीजों को फल बांटे और विधायक दल नंद की लंबी उम्र की कामना की। इस मौके पर कांग्रेस नेता श्रवण पटेल, पूरन पटेल,रामप्रसाद नंदा,ठंडा राम पटेल, धागराम नायक, दयानिधि पटेल, युवा कांग्रेस अध्यक्ष मनोज पटेल, सेवादल ब्लॉक अध्यक्ष विक्की वैष्णव मिडिया प्रभारी सत्या भोई सहित कांग्रेसी उपस्थित रहे।

विभिन्न कार्यक्रमों में ये कार्यकर्ता रहे उपस्थित- इस दौरान आदिवासी कांग्रेस के जिलाध्यक्ष एवं

विधायक प्रतिनिधि मोहन लाल भोई, इंटक जिलाध्यक्ष संतलाल बारीक, नगर पालिका परिषद सरायपाली के पार्षद सुरेश भोई, विधायक प्रतिनिधि भरत मेश्राम, महिला कांग्रेस के प्रदेश सचिव दीपांजलि बारीक, विधायक प्रतिनिधि बिरंची बेताल, जनपद सदस्य प्रतिनिधि क्षमानिधि साहू, विजय शंकर पटेल, गोपाल अग्रवाल, मोहन गुप्ता, नीलांचल भोई, कमल पटेल, हेमा श्रीवास, करण पटेल, दीपक साहू, तन्मय पंडा, शुरू पाणिग्रही, राजा अग्रवाल, केशव अग्रवाल, सौरभ पाणिग्रही, दुष्यंत साहू, विभिषण चौहान, दुर्गेश राजपूत, बबलू पटेल, सहित कार्यकर्ता बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

खबर-खास

बढ़व संगवारी जीने की राह ने हिर्री स्कूल में बताई कैरियर की राह

दुर्ग। बढ़व संगवारी जीने की राह' के अंतर्गत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हिर्री में कैरियर काउंसलिंग एवं व्यक्तित्व विकास पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया । कार्यक्रम में डॉ मीरा बघेल, चार्टर्ड अकाउंटेड विष्णु बघेल,ह्याष्द्दह्ल के सेवानिवृत्त सहायक प्राध्यापक डॉ राधेश्याम बघेल, समाज सेविका रामेश्वरी परगनिहा मुख्य रूप से उपस्थित थे। अतिथियों ने स्कूली छात्रङ्कछात्राओं के बीच अपने अनुभव बांटे, तथा कैरियर निर्माण के लिए उनकी जिज्ञासाओं का समाधान दिया। इस अवसर पर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हिर्री के प्राचार्य एम आर मंडारे, व्याख्याता वर्षा वर्मा, दमयंती देशमुख सहित अन्य शिक्षक मौजूद थे। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने बढ़चढकर हिस्सेदारी निभाई।

गुरुजी ने गौ सेवा आयोग व राज्य दुग्ध संघ में यादवों को महत्व देने उठाई आवाज

दुर्ग। दुर्ग जिले के समाजसेवी गुरुजी बिसे यादव ने छग विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह से मुलाकात की। करीब 30 वर्षों बाद हुई दोनों की मुलाकात काफी आत्मीयता भरी रही। श्री यादव और डॉ. रमन के बीच राजनीति और समाज हित के कई मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई। चर्चा में गुरुजी बिसे यादव ने कहा कि छत्तीसगढ़ स्थापना के 25 वर्षों में यादव समाज काफी उपेक्षित रहा है। वर्तमान में छत्तीसगढ़ में यादवों की जनसंख्या लगभग 35 लाख है। वर्तमान सरकार अब यादवों को जनसंख्या के हिसाब से महत्त्व व राजनीति में प्रतिनिधित्व दें। श्री यादव ने राज्य दुग्ध महासंघ और गौ सेवा आयोग अध्यक्ष जैसे पदों पर यादव समाज के ही योग्य व्यक्ति को प्रतिनिधित्व देने विधानसभा अध्यक्ष से मांग की है। इस दौरान यादव समाज के गहिरा गुरु राजेश यादव, योद्धा नर्तन के प्रदेश अध्यक्ष कमलेश यादव, उपाध्यक्ष हर्ष हिंद यादव भी उपस्थित रहे।

पूज्य बहराणा साहेब की शोभायात्रा में शामिल हुए सिंधी समाज के संत

संगीतमय सत्संग की प्रस्तुति ने बांधी समां

दुर्ग। सर्व सिंधी समाज दुर्ग-भिलाई द्वारा रविवार को पूज्य बहराणा साहेब की 1313 ज्योति कलश की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा की शुरुआत शाम को शिवनाथ नदी रोड स्थित पंचवटी मांगलिक परिसर से हुई। शोभायात्रा में शदाणी दरबार रायपुर के संत साई युधिष्ठिर लाल, सिंधु अमरधाम आश्रम चकरभाठा बिलासपुर के साई लालदास के अलावा सिंधी समाज के अन्य संतों ने शामिल होकर आयोजन को दिव्यता प्रदान की। शोभायात्रा में सैंकड़ों की संख्या में श्रद्धालु जुटे। शोभायात्रा के पूर्व दोपहर में पंचवटी मांगलिक परिसर में संतों का भव्य अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर सिंध म्यूजिकल ग्रुप ग्वालियर की संगीतमय सत्संग की प्रस्तुति ने समां बांधी। तत्पश्चात साई लालदास साहेब ने प्रवचन के माध्यम से भक्तों का मार्गदर्शन किया। इस धार्मिक आयोजन में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पूर्व विधायक अरुण वोरा शामिल हुए। उन्होने संतो के दर्शन कर शहरवासियों की सुख-समृद्धि के लिए कामना की। इस दौरान सर्व सिंधी समाज द्वारा श्री वोरा का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में सर्व सिंधी समाज आसनदास मोहनानी, नारायण मेघवानी, ज्ञानचंद रुचंदानी, अनिल लोहानी, प्रेम शोभानी, राम बख्तयार, नवल हासिजा, महिला मंडल की टीम के अलावा प्रदेशभर से सिंधी समाज के लोग शामिल रहे।

दुर्ग जिला यादव ठेठवार समाज का दीपावली मिलन व कार्यकारणी की बैठक

दुर्ग। दुर्ग जिला यादव ठेठवार समाज द्वारा रविवार को यादव ठेठवार भवन राजीव नगर दुर्ग मे दीपावली मिलन व कार्यकारणी बैठक किया गया। बैठक मे यदुकुल शिरोमणि भगवान कृष्ण की पूजाअर्चना कर दीपावली की बधाई दी गई। बैठक मे दुर्ग जिला यादव ठेठवार समाज के अध्यक्ष मुकेश यादव संगठन का विस्तार सर्वसम्मति किया गया। जिसमे महिला प्रकोष्ठ के अध्यक्ष श्रीमति अहिल्या यादव को बनाया गया। साथ ही मुकेश यादव द्वारा सीनियर संगठन मे संरक्षक - कलीराम यादव, रोहित यादव, राधेलाल यादव,भुनेश्वर यादव, गेंदलाल यादव। उपाध्यक्ष - जनक यादव, संजय यादव, होमलाल यादव, महासचिव - अशोक यादव। कोषाध्यक्ष - सतीश कुमार यादव। संगठन मत्री - परमानंद यादव, रमेश यादव। प्रचारप्रसार मंत्री - शिव प्रसाद यादव। विधि सल्हाकर - कृष्णकुमार यादव (अधिवक्ता), बृजराज यादव (अधिवक्ता),गैंदलाल यादव (अधिवक्ता)। सांस्कृतिक अध्यक्ष - करण यादव। आदि सभी पदाधिकारियों की नियुक्ति की गई तथा कहा गया कि आगे महिला प्रकोष्ठ श्रीमती श्रीमति अहिल्या यादव द्वारा संगठन विस्तार किया जाएगा।

एसपी धर्मेंद्र सिंह ने जिले के तीन उप. पुलिस अधीक्षकों को नवीन पदस्थापना के लिए पुष्पगुच्छ एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर भावभीनी विदाई दी

कवर्धा (समय दर्शन)। जिले में तैनात तीन पुलिस के राजपत्रित अधिकारियों का स्थानांतरण हुआ है। जिसमें (1) उप. पुलिस अधीक्षक मुख्यालय श्रीमती मोनिका सिंह परिहार का स्थानांतरण जिला कबीरधाम से सहायक सेनानी 17वीं वाहिनी छ.स.ब.ल. कबीरधाम, (2) एस.डी.ओ.पी. बोडला संजय तिवारी का स्थानांतरण सहायक सेनानी दूसरी वाहिनी छ.स.ब.ल. सकरी बिलासपुर (3) उप. पुलिस अधीक्षक ऑप्स सतीश धुर्वे जिला कबीरधाम का स्थानांतरण उप. पुलिस अधीक्षक एस.टी.एफ बघेरा जिला दुर्ग हुआ है। इन सभी अधिकारियों को एसपी कबीरधाम धर्मेंद्र सिंह के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पुष्पेंद्र बघेल व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पंकज पटेल के मार्गदर्शन में 12 नवंबर को रक्षित निरीक्षक महेश्वर सिंह के दिशा निर्देश पर पुलिस अधीक्षक कार्यालय में विदाई दी

गई। जिसमें उपस्थित पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पंकज पटेल, उप. पुलिस अधीक्षक संजय ध्रुव, उप. पुलिस अधीक्षक कृष्ण कुमार चंद्राकर, रक्षित निरीक्षक महेश्वर सिंह एवं कार्यालयीन अधिकारी/कर्मचारियों के द्वारा स्थानांतरण पर जा रहे तीनों अधिकारियों को पुष्पगुच्छ भेंट कर, इनके द्वारा किए गए सराहनीय कार्यों की जमकर सराहना किया गया।

ज्ञात हो कि जिले में विगत वर्षो से अनेक कानून व्यवस्था ड्यूटी में बहुत ही शान्तिपूर्वक ड्यूटी सम्पन्न कराने में इन तीनों अधिकारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वहीं कई गंभीर अपराधों को सुलझाने में सफलता अर्जित हुई हैं। जिसकी सराहना विदाई समारोह में उपस्थित जिले के समस्त अधिकारी/कर्मचारियों के द्वारा अपने उद्बोधन में किया गया।

सहसपुर लोहारा पुलिस ने दो गांजा तस्करों को पकड़ा

कवर्धा (समय दर्शन)। जिले की सहसपुर लोहारा पुलिस ने अवैध गांजा परिवहन के एक प्रकरण में दो आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता पाई है। आरोपियों के विरूद्ध पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट की धारा 20 (इ) के तहत कार्यवाही की है। इस दौरान आरोपियों के कब्जे से 1.846 किलोग्राम गांजा बरामद किया गया है, जिसकी बाजार में अनुमानित कीमत 27,690 रुपए आंकी गई है।

मुखबीर की सूचना पर सोमवार को हुई इस कार्रवाई में ईरिमकसा तिराहा के पास रेड कार्यवाही के दौरान मादक पदार्थ गांजा के साथ दो तस्करों को पकड़ा गया। पकड़े गए आरोपियों ने पूछताछ में पुलिस को अपना नाम 1. सतीश वाजपेयी उर्फ सोनू, पिता स्व. अशोक राव वाजपेयी, 40 वर्ष, निवासी वार्ड नं. 09, स. लोहारा व 2. राजेश साहू, पिता विष्णु साहू, 39 वर्ष निवासी ग्राम कोयलारी थाना सिंघनपुरी जंगल दोनों निवासी जिला कबीरधाम (छ.ग.) बताया है।

पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र सिंह (भा.पु.से.) के मार्गदर्शन में अतिरिक्त

पुलिस अधीक्षक पुष्पेंद्र बघेल और पुलिस अनुविभागीय अधिकारी कृष्ण कुमार चंद्राकर के निर्देशन में थाना प्रभारी लालमन साव के नेतृत्व में यह कार्यवाही की गई। पुलिस ने आरोपियों के पास कुल 1.846 किलोग्राम गांजा बरामद किया है। पुलिस ने मादक पदार्थ को जब्त कर लिया और आरोपियों के विरुद्ध थाना स. लोहारा में अपराध क्रमांक 322/24 धारा 20 (इ) एनडीपीएस एक्ट के तहत विधि सम्मत कार्यवाही करते हुए उन्हें माननीय न्यायालय में न्यायिक रिमांड हेतु भेज दिया है, जहां से माननीय न्यायालय ने उन्हें जेल भेज दिया है।

इस कार्यवाही में साइबर सेल प्रभारी आशीष कंसारी, उप निरीक्षक लक्ष्मीनारायण साव, प्रधान आरक्षक 171 बाबूलाल पांचे, प्रधान आरक्षक 284 सोहन वर्मा, आरक्षक 473 रविशंकर जायसवाल, आरक्षक 732 पुरुषोत्तम ठाकुर, और आरक्षक 515 अमित गौतम का विशेष योगदान रहा।

चचेड़ी कोटवार को हटाकर नए कोटवार नियुक्त करने ग्रामीणों ने की मांग

कवर्धा (समय दर्शन)। ग्राम कोटवार की भूमिका गांवों में बहुत ही अहम माना गया है। ग्राम कोटवार जन्म, मृत्यु, शादी, ब्याह के अलावा शासकीय कार्य की मुनादी कराकर जानकारी देना नोटिस तामील करने के साथ गांव में होने वाली लड़ाई झगड़े कृषि भूमि आबंटन से लेकर किसी अप्रिय घटनाओं और अवैधानिक कार्य को शासन तक खुफ्फिया जानकारी देना आदि न्यायिक व्यवस्था सुरक्षा संचालन की दिशा में सकारात्मक पहलू की कड़ी माना गया है। किंतु इनकी भूमिका थानेदार की तरह हो जाए तो अच्छा संकेत नहीं कहा जा सकता है। इस दिशा में इन दिनों कबीरधाम जिले के पिपरिया उप तहसील थाना अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत चचेड़ी ग्राम में कोटवार की भूमिका को लेकर ग्रामवासी बहुत परेशान हो गए हैं। परेशान ग्रामीणों ने जिला कलेक्टर कबीरधाम सहित अन्य राजस्व विभाग में शिकायत कर कोटवार को हटाने की मांग की है।

ग्राम पंचायत चचेड़ी के ग्रामकोटवार की दादागिरी से परेशान ग्रामवासियों ने हटाने की बात कह कर लिखित शिकायत जिला कलेक्टर कार्यालय में किया है। इसके संबंध में थाना प्रभारी को भी जानकारी दी गई है। ग्रामवासियों ने अपनी शिकायत में लिखा है कि शासकीय

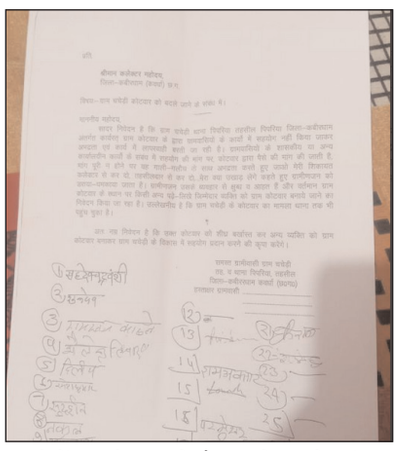

कार्य में सहयोग करने के बदले रूपये मांगता है। शासन की जानकारी सही नहीं देता है, उल्टे ग्रामवासियों को अभद्रता पूर्ण व्यवहार करते हुए गाली गलौच करने लगता है। कहता है मेरी शिकायत जहां जाकर करना है कराओ कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। इस किस्म की तानाशाही पूर्ण रवैया से क्षुब्ध होकर ग्रामवासियों ने लिखित में हटाने जाने की मांग करते हुए किसी अन्य पढ़े लिखे व्यक्ति की नियुक्ति ग्रामकोटवार के रूप में करने की मांग की है। ताकि चचेड़ी ग्राम विकास में कोई बाधा उत्पन न हो और ग्रामीणों को परेशान न होना पड़े।

छत्तीसगढ़ी फिल्म संगी रे लहुत के आजा का निर्देशक सतीश जैन पोस्टर विमोचन किया

रायपुर (समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ फिल्म के सफल निर्देशक सतीश जैन . मोर छईहा भुइया के संगीत निर्देशक रहे बाबला बागची के निर्देशन में बनी वहुप्रतीक्षित छत्तीसगढ़ी फिल्म जिस फिल्म का सबको बेसब्री से इंतजार था संगी रे लहूत के आजा की पोस्टर विमोचन आज किया गया जो की छत्तीसगढ़ी फिल्म के भीष्म पितामह और फिल्म के डायरेक्टर बाबला बागची के गुरु और गॉडफादर श्री सतीश जैन के करकमलों से विमोचन हुआ सतीश जैन प्रोडक्शन ऑफिस भठागांव रायपुर में किया गया पोस्टर विमोचन के इस कार्यक्रम में ,प्रकाश अवस्थी, पुष्पेंद्र सिंह, योगेश अग्रवाल ,पूरन किरी, क्रांति दीक्षित, मयंक रायकर, नितेश झा, सुशांत शर्मा,के उपस्थिति में गरिमामई और शानदार तरीके से संपन्न हुआ। फिल्म 3 जनवरी 2025 को रिलीज हो रही है

सतीश जैन ने बताया कि इस फिल्म में संगीतकार का एक संघर्ष देखने को मिलेगा और इसके गाने भी सुपर डुपर हिट होने वाला है इस फिल्म में सतीश जैन ने भी एक्टिंग की है

बबला बागची ने बताया कि ये फिल्म एक संघर्ष की कहानी है जो कि मुंबई से लेकर छत्तीसगढ़ तक की कहानी को दर्शाता है बबला बागची ने कहा कि फिल्म दर्शकों को खूब पसंद आएगी क्योंकि इस फिल्म में बहुत कुछ नया देखने को मिलेगा

इस वर्ल्ड डायबिटीज डे पर अपनी रोज़ाना की डाइट में बादाम को करें शामिल

रायपुर। हर साल 14 नवंबर को वर्ल्ड डायबिटीज डे मनाया जाता है। इस दिन दुनिया भर में डायबिटीज को लेकर जागरूकता बढ़ाई जाती है और इसकी अच्छे से देखभाल करने की आवश्यकता पर जोर दिया जाता है। भारत, जिसे दुनिया की डायबिटीज कैपिटल के रूप में जाना जाता है, एक बढ़ती चुनौती का सामना कर रहा है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के एक हालिया अध्ययन से पता चला है कि 101 मिलियन भारतीयों को डायबिटीज है, जबकि 136 मिलियन लोग प्री-डायबिटिक हैं। यह खासतौर से हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन में बदलाव लाकर, डायबिटीज की असरदार प्रबंधन रणनीतियों को अपनाने के महत्व को उजागर करता है। डायबिटीज को काबू में रखने का एक तरीका यह भी है कि हमें बादाम जैसे पौष्टिक फूड को अपनी डाइट में शामिल करना चाहिए। बादाम में 15 आवश्यक पोषक तत्व होते हैं, जिनमें प्रोटीन, अनसैचुरेटेड फैट्स और डाइटरी फाइबर शामिल हैं। ये पोषक तत्व ब्लड शुगर लेवल को बनाए रखने में मदद करते हैं। शोध से पता चला है कि बादाम खाने से ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने में मदद मिलती है। खासकर टाइप 2 डायबिटीज के मरीजों के लिए यह बहुत फायदेमंद होता है। बादाम खाने से कार्बोहाइड्रेट युक्त खाद्य पदार्थों के खाने के बाद ब्लड शुगर लेवल तेजी से नहीं बढ़ता है। इसके अलावा, बादाम खाने से टाइप 2 डायबिटीज से पीडित लोगों के शरीर में सूजन कम करने में मदद मिलती है। शीला कृष्णास्वामी, न्यूट्रीशन एवं वेलनेस कंसल्टेंट, ने कहा भारत में डायबिटीज तेजी से बढ़ रहा है और निष्क्रिय जीवनशैली और खराब खान-पान की आदतें इसका प्रमुख कारण हैं। इसलिए, अपनी डाइट में प्रोटीन, अनसैचुरेटेड फैट और डाइटरी फाइबर से भरपूर प्राकृतिक खाद्य पदार्थों को शामिल करने की सलाह दी जाती है। बादाम हर किसी की रोजाना की डाइट में एक बेहतरीन संकलन हैं, क्योंकि इनमें कुछ ऐसे पोषक तत्व होते हैं जो ब्लड शुगर के स्तर को प्रबंधित करने में मदद करते हैं।

पीडब्ल्यू स्कूल ऑफ स्टार्टअप्स ने पहले बैच के बाद आरम्भ 2.0 के लिए आवेदन खोले

रायपुर। फिजिक्स वाला की पहल, पीडब्ल्यू स्कूल ऑफ स्टार्टअप्स, ने अपने पहले बैच आरम्भ 1.0 को पूरा किया है, जिसका उद्देश्य भारत भर के नए उद्यमियों को एक साथ लाना है। पहले चरण की समाप्ति के बाद, दूसरा बैच आरम्भ 2.0 के लिए आवेदन खुल चुके हैं, जो 19 नवंबर, 2024 से नोएडा कैंपस में शुरू होने वाला है। पीडब्ल्यू स्कूल ऑफ स्टार्टअप्स का उद्देश्य युवा प्रतिभाओं को बढ़ावा देना और भारत के भविष्य के उद्यमियों को अपने विचारों को आगे बढ़ाने में सहायता प्रदान करना है। पीडब्ल्यू स्कूल ऑफ स्टार्टअप्स नए उद्यमियों को सलाह और वित्तीय संसाधनों के साथ समर्थन करने का प्रयास कर रहा है। यह पांच-दिवसीय रेजिडेंशियल प्रोग्राम ने भारत के विभिन्न स्थानों से प्रतिभागियों का स्वागत किया, जिनमें बिहार के मोतिहारी से लेकर केरल के कोच्चि तक प्रतिभागी शामिल हैं। आरम्भ 1.0 ने प्रतिभागियों को एक शानदार सीखने का अनुभव प्रदान किया, जिसमें बॉम्बे शेविंग कंपनी के सीईओ शंतनु देशपांडे, IIM और DTU के प्रोफेसर, पी डब्लू के चीफ टेक्नोलॉजी और प्रोडक्ट ऑफिसर, विनीत गोविल और वीपी-प्रोडक्ट, योगेश शुक्ला जैसी इंडस्ट्री से जुड़ी हस्तियों के सत्र शामिल थे। इन मेंटर्स ने स्टार्टअप स्किल्स पर व्यवहारिक जानकारी साझा की, जिसमें यूनिट इकॉनॉमिक्स, MVP (मिनिमम वायबल प्रोडक्ट) डेवलपमेंट, ब्रांड बिल्डिंग और प्रभावी पिचिंग जैसे विषयों पर चर्चा की गई। इस प्रोग्राम के दौरान, छात्रों ने स्थानीय प्रभाव उत्पन्न करने के कई अनोखे विचार प्रस्तुत किए। कुछ प्रोजेक्ट्स में पास के ग्राहकों के साथ स्थानीय दुकानदारों को जोड़ने वाला एक प्लेटफॉर्म और किसानों की मदद के लिए ऑर्गेनिक खाद प्रदान करने वाला एक इको-सस्टेनेबल समाधान शामिल था। फिजिक्स वाला के को-फाउंडर, प्रतीक माहेश्वरी ने कहा, आरम्भ 1.0 ने हमें भारत के युवा पीढ़ी में छुपी अपार संभावनाओं को दिखाया। सही मार्गदर्शन और संसाधनों के साथ, ये नए उद्यमी ऐसे समाधान

तैयार कर सकते हैं जो न केवल स्थानीय चुनौतियों को हल करेंगे बल्कि वैश्विक स्तर पर भी असर डाल सकते हैं। पीडब्ल्यू स्कूल ऑफ स्टार्टअप्स में, हम इन होनहार प्रतिभागियों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, ताकि वे अपने सपनों को साकार कर सकें। आरम्भ 1.0 के बाद, पीडब्ल्यू स्कूल ऑफ स्टार्टअप्स आरम्भ 2.0 को लॉन्च करने की तैयारी कर रहा है, जो 19 नवंबर, 2024 से नोएडा कैंपस में शुरू होगा। यह नया प्रोग्राम इस रफ्तार को आगे बढ़ाने का इरादा रखता है, जो पटना, भोपाल, इंदौर, लखनऊ, जयपुर जैसे कई शहरों के अन्य नए उद्यमियों को एक साथ लाएगा।

न्यायालय तहसीलदार तहसील पिपरिया जिला कबीरधाम (छ.ग.)

ईश्तहार

ईकोर्ट क्र.....ब/121 वर्ष 2023-24
ग्राम जिन्दा प.ह.नं. 04

एतद द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक शिवा कौशिक पिता लक्ष्मण कौशिक निवासी ग्राम जिन्दा तहसील पिपरिया जिला कबीरधाम द्वारा अपने भाई राहुल कौशिक के जन्म प्रमाण पत्र शासकीय कार्य में आवश्यकता पडने से जारी कराने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है। आवेदक के भाई राहुल कौशिक की जन्म दिनांक 13/10/2005 को ग्राम जिन्दा में हुआ है।

अत: उक्त संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/संस्था को कोई दावा/आपत्ति पेश करना हो तो वे स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से उपस्थित होकर इस न्यायालय में नियत समय व तिथि तक दावा-आपत्ति पेश कर सकते हैं। नियत तिथि के पश्चात् प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार आज दिनांक 14/10/2024 को मेरे हस्ताक्षर व न्यायालय के पदमुद्रा से जारी किया गया।

पेशी दिनांक 12/11/2024

मुहर

तहसीलदार
पिपरिया

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) बोड़ला, जिला कबीरधाम (छ.ग.)

ईश्तहार

रा.प्र.क्र..... अ/2 वर्ष 2024-25

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक अनुराधा साहू पति दुर्गेश कुमार साहू जाति-तेली, निवासी ग्राम बघर्रा, तहसील-बोड़ला, जिला-कबीरधाम के द्वारा अपने नाम की भूमि स्वामी हक की भूमि ग्राम बघर्रा, प.ह.नं. 17, रा.नि.मं. पोंड़ी, तहसील-बोड़ला स्थित भूमि ख.नं 290/4/ख रकबा 0.141 हे. भूमि को कृषि प्रयोजन से औद्योगिक प्रयोजन (गुड़ उद्योग) हेतु व्यपवर्तित कराये जाने हेतु प्रस्तुत किया गया है।

उपरोक्त संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/संस्था को कोई दावा/आपत्ति पेश करना हो तो वे स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से उपस्थित होकर इस न्यायालय में नियत तिथि 21.11.2024 तक दावा-आपत्ति पेश कर सकते हैं। नियत तिथि पश्चात् प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 05.11.2024 को मेरे हस्ताक्षर व न्यायालयीन पदमुद्रा से जारी किया गया।

जारी दिनांक 05.11.2024
पेशी दिनांक 21.11.2024

मुहर

अनुविभागीय अधिकारी
(राजस्व) बोड़ला

संक्षिप्त-खबर

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बसना में 43 मानसिक स्वास्थ्य के मरीजों का जाँच व उपचार

बसना (समय दर्शन)। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत डॉ पी कुंदेशिया सी एम एच ओ महासमुंद, श्रीमती नीलू घृतलहरे डीपीएम व डॉ सी पी चंद्राकर नोडल अधिकारी मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के समन्वय से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बसना जिला महासमुंद में मानसिक स्वास्थ्य फिक्स डे कैम्प आयोजित किया गया। इस दौरान 43 मरीजों को निदान कर नि:शुल्क मेडिसिन के साथ साइकोसोशल इंटरवेंशन किया गया। इस कैम्प मे डॉ नारायण साहू बी एम ओ, ढोलचंद नायक बी पी एम,मेडिकल कालेज सह जिला चिकित्सालय महासमुंद, स्पर्श क्लीनिक से रामगोपाल खूंटे साइकेट्रिक सोसल वर्कर, टेकलाल नायक मानिटरिंग प्रमुख व स्टॉफ के साथ मेंटल हेल्थ कैम्प आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण इलाके के जरूरतमंद मानसिक रोगियों का नि: शुल्क समुचित एवं उत्तम ईलाज से शासन की महत्वाकांक्षी योजना से जोड़ना है। ताकि शासन प्रशासन की विशेष योजनाओं का लाभ ग्रामीण इलाके के लोग ऐसे कैम्प के माध्यम से लाभ ले सकें ।

डुमरडीहकला में 9 दिवसीय विशाल चंडी यज्ञ एवं श्रीमद् देवी भागवत का आयोजन 2 दिसंबर से

राजनांदगांव। ब्लॉक के डुमरडीहकला में सरपंच दिनेश सिंह ठाकुर एवं समस्त ग्रामवासी द्वारा 2 दिसंबर से 10 दिसंबर तक 9 दिवसीय श्रीमद् देवी भागवत व विशाल चंडी यज्ञ का आयोजित किया गया है, जिसमें छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध कथावाचक आर्चाय पं. रामानुज युवराज पांडेय श्री जगन्नाथ मंदिर अमलीपदर के श्रीमुख से संपन्न होगा। आयोजन सरपंच दिनेश सिंह ठाकुर ने सभी धर्मप्रेमियों से इस पावन अवसर पर कार्यक्रम में शामिल होने की अपील की है।

बकाया वेतन न मिलने से नाराज सफाई कर्मी रहेंगे हड़ताल पर

राजनांदगांव। नगर पालिक निगम के नवनियुक्त आयुक्त अतुल विश्वकर्मा का सफाई कर्मचारी संघ के अध्यक्ष संजय नायक (गोलू) के नेतृत्व में सफाई कर्मचारियों ने विगत दिनों गुलदस्ता देकर स्वागत किया। वहीं वेतन नहीं मिलने से नाराज सफाई कर्मियों ने आयुक्त को ज्ञापन देकर जल्द से जल्द वेतन भुगतान करने का आग्रह किया है। सफाई कर्मचारी संघ के अध्यक्ष संजय नायक (गोलू) ने कहा है कि नगर निगम क्षेत्र में कार्यरत सफाई कर्मियों ने अक्टूबर माह का वेतन न मिलने से नाराज होकर हड़ताल पर जाने का निर्णय लिया है। इससे पूर्व सफाई कर्मचारी संघ के माध्यम से पूर्व निगम आयुक्त एक पत्र के माध्यम से अक्टूबर माह के वेतन का शीघ्र भुगतान करने की मांग की थी। जिन्होंने वेतन के कुछ अंश को अग्रिम के रूप में देकर महज खानापूर्ति करने का काम किया था जो नाकाफी था। उक्त मांग सामने दीपावली पर्व को देखते हुए की गई थी। संघ ने यह दलील थी कि, महंगाई के इस दौर में जहां सफाई कर्मियों के परिवार को घर चलाने में दिक्कतें जाती है। वहीं दीपावली पर्व पर पैसों की और भी ज्यादा जरूरत पड़ती है। उन्होंने आगे बताया कि, सालों बाद पहली बार बिना वेतन के ही दीवाली मनानी पड़ी, जबकि शासन का स्पष्ट आदेश था कि, अक्टूबर माह का वेतन अक्टूबर माह में ही दीवाली पर्व के पहले भुगतान किये जाने का था, लेकिन बड़े ही दुर्भाग्य की बात है कि, समय-सीमा के भीतर वेतन का भुगतान नहीं हो पाया। यहां तक कि, दीपावली पर्व के गुजर जाने के बाद भी और नवंबर महीना लग जाने के बाद भी, अक्टूबर माह का हमारा वेतन आज भी अटका पड़ा है। समय पर वेतन नहीं मिलने के कारण हमारे सभी सफाई कर्मचारियों को आर्थिक समस्याओं के बोझ तले दबना पड़ रहा है और अनावश्यक कर्ज लेना पड़ रहा है। वेतन जारी करने, हमारे द्वारा पुन: पूर्व आयुक्त से आग्रह किया गया तो, उनके द्वारा अक्टूबर माह का वेतन 10 नवम्बर से पहले करने का आश्वासन दिया गया था, लेकिन उक्त समय-सीमा बीत जाने के बावजूद भी निगम वेतन न जारी कर सका। निगम की वादाखिलाफी से नाराज होकर ही सफाई कर्मचारियों ने हड़ताल पर जाने का निर्णय लिया है।

औरी में किसान जंगली सुअर से परेशान, फसल को कर रहे खराब

पाटन (समय दर्शन)। क्षेत्र के अधिकांश ग्रामों में इन दिनों धान फसल की कटाई जोरों पर है। पाटन क्षेत्र के ग्राम औरी में धान फसल के कटाई के तुरंत बाद लगभग 500 सौ एकड़ से अधिक में किसानों द्वारा मक्का की फसल उगाई जाती है। जिसमें पिछले कई वर्षों से जंगली सुअर (बरहा) के आतंक से किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। गांव के किसान वन विभाग को इस तरह की परेशानियों से अवगत करा चुके हैं। लेकिन ग्रामीणों को बरहा से फसलों को होने वाली नुकसान से निजात नहीं मिल पाया है। किसानों ने

समाचार पत्र एवं सोशल मीडिया के माध्यम से प्रशासन से बरहा के आतंक से राहत दिलाने की मांग किया है।

ग्राम औरी के किसान अतुल चंद्राकर,दीपक चंद्राकर,कोमल कुर्रे, चंद्रदेव सोनवानी,अशोक कुर्रे,रवि चंद्राकर, उत्तरा सोनवानी, माधव कुर्रे, आशा साहू, विनोद चंद्राकर सहित अन्य किसान इससे पीड़ित हैं। इन किसानों द्वारा धान फसल की कटाई के बाद मक्का की खेती की जाती है। किसानों ने फसल के बुआई से पहले बरहा से फसल को होने वाली नुकसान से निजात दिलाने की मांग किया है।

भोजन व पानी की तलाश में आते हैं गांवों में- भोजन और पानी के तलाश में बरहा अब गांव से सटे खेतों की फसलों पर धावा बोल रहे हैं। किसानों की फसल बर्बाद तो होता ही है साथ ही साथ ग्रामीणों को जान का भी खतरा बना रहता है। पूर्व में भी सुअरों द्वारा क्षेत्र के कृषकों की रबी एवं खरीफ सहित सब्जी की फसल को नुकसान और लोगों पर हमला हो चुका है।

युवक को कर दिया था घायल

कुछ वर्ष पहले ग्राम औरी के एक युवक पर खेती कार्य के दौरान हमला कर बुरी तरह घायल कर दिया था। युवक को जांघ में 15 टांका लगा था।

पत्रकारों के लिए पुलिस बनी गुंडा

- पत्रकारों के द्वारा प्रशासन को जानकारी देने के बाद भी किया पंडाल को तहस नहस

भिलाई (समय दर्शन)। मामला था पुलिस द्वारा की गई आरोग्यम हॉस्पिटल के शिकायत पर वरिष्ठ पत्रकार पर एफ आई आर का। यह इसलिए किया गया था की पांच माह पहले दुर्ग के वरिष्ठ पत्रकार द्वारा दुर्ग के सबसे बड़े आरोग्यम हॉस्पिटल में महिलाओं की निज़ता के उल्लंघन का मामला 3 जून को जिसमे एक नहीं बल्कि 2 बार दुर्ग की कलेक्टर महोदया को इस हॉस्पिटल पर कार्यवाही करने के लिए शिकायत किया गया वही इस शिकायत पर तात्कालिक नर्सिंग होम नोडल अधिकारी ने जाँच किया तो पायाकि सही हैँ यह शिकायत। लेकिन कार्यवाही इस हॉस्पिटल पर ना कर मुख्य जिला एवं स्वास्थ्य अधिकारी मनोज दानी ने उसे और भ्रष्टाचार करने पर जोर दिया। बहरहाल इस हॉस्पिटल द्वारा शिकायतकर्ता पत्रकार पर झूठे एफ आई आर करवा दिया गया। बिना जाँच इस एफ आई आर पर पूरा संयुक्त पत्रकार संगठन एक हो कर आज 11 नवम्बर को पुलिस के खिलाफ झूठी एफ आई आर रद्द करने और जिला प्रशासन को आरोग्यम हॉस्पिटल पर नियमानुसार वैधानिक कार्यवाही करने का शांतिपूर्ण ढंग से धरना के बाद कलेक्टर को

ज्ञापन देने का था लेकिन जिस तरह से दुर्ग पुलिस ने पत्रकारों के साथ अत्याचार किया उसे पुलिस विभाग दागदार हो चूका है। प्रशासन को जानकारी देने के बाद भी जो हीटलर की तरह कार्यवाही किया उससे पुलिस की छवि खराब है गई है।

कलेक्टर को मिलकर दिया ज्ञापन - दमनकारी दोषी पुलिस अधिकारी पर कार्यवाही करने, पत्रकार पर दर्ज झूठा एफ आई आर रद्द करने और महिलाओं की इज्जत से खुलेआम खेलने वाले, महिलाओं की निजता का उल्लंघन करने वाले आरोग्यम हॉस्पिटल पर कार्यवाही करने का ज्ञापन सौंपा गया। प्रदेश से आये छ ग पत्रकार एकता महासंघ के वरिष्ठ पत्रकार अखिल भारतीय पत्रकार सुरक्षा समिति के प्रदेश अध्यक्ष गोविन्द शर्मा, राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष राकेश प्रताप सिँह परिहार बिलासपुर से, महफूज़ खान मुंबई से,जितेंद्र जयसवाल रायपुर से, रजा खान रायगढ़ से,अनंत भगत, मो निज़ाम अंसारी गोविंद शर्मा, विक्रांत मालकन बलराम पुर से राकेश जसपाल, निरंजन गुप्ता नंदिनी अहिवारा से ,दर्शन मिरि अभनपुर से, प्रेम सोनी, संगीता साहू, माही सार्वा, कृष्णा लाल रायपुर से, राकेश तम्बोली, गोपाल निर्मलकर, धर्मेंद्र गुप्ता, मनीष शर्मा,जीवनी खंडे,मोहन लाल गुप्ता, सुरेश गुप्ता,रोशन लाल सिन्हा, विजय देवांगन, सुकांता कुमार खाड़ा, शिवेंद्र शिंदे, तरुण पटेल,नीलेश साहू मिश्री लाल प्रजापति, गोवर्धन ताम्रकार,नवीन राजपूत, राजेश ताती सहित कई पत्रकार मौजूद थे।

कुंभकार महासंघ फुलझर अंचल का तीन दिवसीय चक्रपूजा महोत्सव 6 से 8 दिसंबर को बोइरडीह में आयोजित

बसना (समय दर्शन)। ग्राम बोइरडीह, शाखा सभा पिरदा में कुंभकार महासंघ फुलझर अंचल द्वारा तीन दिवसीय चक्रपूजा महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। जो आगामी 6 से 8 दिसंबर 2024 तक चलेगा। महासंघ के महासचिव धर्मेन्द्रनाथ राणा द्वारा इस आयोजन की विस्तृत जानकारी दी गई है। महोत्सव का शुभारंभ 6 दिसंबर को कलश यात्रा और मूर्ति स्थापना के साथ होगा, जिसके उपरांत कुराल पुराण कथा का आयोजन किया जाएगा। यह पवित्र आयोजन श्रद्धालुओं के लिए एक विशेष धार्मिक अनुभव प्रदान करेगा। 7 दिसंबर को महोत्सव के द्वितीय दिवस पर विशेष अतिथियों का स्वागत, सम्मान समारोह और आमसभा का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर क्षेत्र के गणमान्य व्यक्ति एवं समाज के वरिष्ठजन उपस्थित रहेंगे, जो महोत्सव की गरिमा को बढ़ाएंगे।

महोत्सव के अंतिम दिन, 8 दिसंबर को मूर्ति विसर्जन एवं पूर्णाहुति की रस्में संपन्न होंगी, जिससे महोत्सव का समापन होगा। इसके साथ ही, रात्रिकालीन कार्यक्रम भी हर दिन का मुख्य आकर्षण रहेंगे, जो दर्शकों का मनोरंजन करने के साथ ही, संस्कृति की समृद्ध धरोहर को प्रस्तुत करेंगे। धर्मेन्द्रनाथ राणा ने सभी श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे इस पावन अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

शास. प्राथमिक शाला पठियापाली में पालक सम्मान समारोह काआयोजन

बसना (समय दर्शन)। बसना विकासखंड के शासकीय प्राथमिक शाला पठियापाली, संकुल केंद्र बड़ेटेमरी में पालक सम्मान समारोह का आयोजन शासकीय प्राथमिक शाला जलकोट और पठियापाली के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विकासखंड शिक्षा अधिकारी जे आर डहरिया, विशिष्ट अतिथि डॉ पूर्णानंद मिश्रा की अध्यक्षता तेजराम साय प्रधान पाठक आश्रम शाला छोटेटेमरी ने की।

स्वागत द्वार पर आकर्षक रंगोली बनाया गया था । शाला प्रांगण मे स्वागत बैनर पोस्टर से सजाया गया था।

जलकोट और पठियापाली के ग्रामीणों और संकुल केंद्र बड़ेटेमरी के शिक्षकों ने आर्थिक सहयोग और श्रमदान कर विद्यालय भवन और बाउंड्रीवॉल की प्लास्टिक पेंट से पोताई और रंगरोगन कर विद्यालय की सुंदरता को बड़ा दिया। ग्रामीणों द्वारा इस प्रकार का अनोखा कार्य पूरे विकास खण्ड बसना के लिए एक मिशाल बन गया है। बसना विकास खंड के ट्विनिंग आफ स्कूल जलकोट और पठियापाली के ग्रामीणजनो और शिक्षकों के सहयोग से विद्यालय भवन और बाउंड्रीवॉल की पोताई और रंगरोगन करने वाला पहला विद्यालय बन गया है, जो बाकि विद्यालयों के लिए उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। आर्थिक सहयोग और श्रमदान

करने वाले सभी ग्रामीणजनों और शिक्षको का आज के कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि विकास खण्ड स्त्रोत समन्वयक डॉ पूर्णानंद मिश्रा के हाथों श्रीफल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

प्राथमिक शाला पठियापाली में शिक्षा दान करने वाली सीमा साहू को भी शाल और श्रीफल देकर सम्मानित किया गया।

इस दौरान छात्रों के द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

इस कार्यक्रम मे पालक सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि :विकासखंड शिक्षा अधिकारी जे आर डहरिया ने अपने संबोधन में जन सहयोग के द्वारा इस प्रकार के कार्य के लिए भूरि भूरी प्रशंसा की और ऐसे रचनात्मक कार्यों का पूरे विकास खण्ड में प्रचार प्रसार करने की बात कही।

विशिष्ट अतिथि :विकास खण्ड स्त्रोत समन्वयक डॉ पूर्णानंद मिश्रा ने अपने संबोधन मे यहां पर नेतृत्वकर्ता के द्वारा जो साहस के साथ कार्य किया गया है वो अद्वितीय और अद्भुत है और ट्विनिंग आफ स्कूल होने के लाभ के बारे में बताया गया । प्रधान पाठक श्रद्ध छोटेटेमरी गफ्फार खान ने श्लोगन एवं शेरो शायरी के साथ खूब समा बाँधा ।

इस कार्यक्रम का सफल संचालन सरिता प्रधान (प्रधान पाठक श्रद्ध पठियापाली)और रीता पति (प्रधान पाठक श्रद्ध जलकोट)और संकुल समन्वयक बड़ेटेमरी वारिश कुमार के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

इस कार्यक्रम में गजेंद्र नायक(संकुल समन्वयक गिधली) तोप सिंग सिदार, गफ्फार खान,ललित भार,,गुलाबराय पटेल, शोभा नायक, डॉ वीरेंद्र कर, प्रेमचंद साव, दिव्यानंद भोई, रश्मी वर्मा,रिजवाना नाज कुरैशी, चंपतलाल चौधरी , मथामनी साहू, शंकरलाल अग्रवाल, मीरा कश्यप, तंजू साव, प्रीतम पटेल,मंजुलता खान, कंचन कुमर्रा, नीलम कुमार आदि शिक्षकगण उपस्थित थे।इस कार्यक्रम को सफल बनाने में स्द्ध अध्यक्ष पठियापाली महेशराम जगत,उपाध्यक्ष ललिता नाग, पुष्पा जगत,गंगाबाई जगत,राजू नंद,धनीराम साहू, प्रमोद साहू,बेलमोती,भवानी नाग, अनिता जगत, रुकमणी जगत,ह्यद्वष अध्यक्ष जलकोट हेमकांती मलिक,उपाध्यक्ष इंदु मोती मालिक, भूमिसुता भोई,उत्तम प्रधान,रूखमणी भोई, नीलम भोई, सुरेश प्रधान,मालती प्रधान, नरेंद्र मालिक एवम ग्रामीणजन बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सरिता प्रधान (प्रधान पाठक पठियापाली)द्वारा किया गया। आभार प्रदर्शन तेजराम साय (प्रधान पाठक आश्रम शाला छोटेटेमरी) ने किया।

हरना बांधा मुक्तिधाम के पास भागवत कथा आज से

दुर्ग (समय दर्शन)। शहर के वार्ड 9 विवेकानंद(शंकर नगर) मे संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ सप्ताह का आयोजन समस्त भक्तगण एवं शिष्य मंडल द्वारा किया गया है जिसमें कथावाचक के रूप में आचार्य श्री पूर्णानंद तिवारी जी उपस्थित रहेंगे। आचार्य जी ने बताया की कथा प्रारंभ होने का समय दोपहर 2 बजे से शाम तक रहेगी। इसके अलावा श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ सप्ताह में 11 विद्वानों द्वारा 11 पोथीं (पुराण) की जाएगी ।और 13 नवंबर से कथा की शुरुआत कलश यात्रा, वेदी पूजा एवं गोकर्ण कथा से होगी । उसके पश्चात नियमित रूप से शुक्र देव परीक्षित संवाद, शिव सती,ध्रुव चरित्र,जड़ भरत चरित्र,प्रहलाद चरित्र,वामन अवतार, राजा अंबरीय कथा, गंगा अवतरण,रामकृष्ण जन्मोत्सव,बाल लीलाएं,गोवर्धन पूजा, मथुरा गमन, कंस वध,रुक्मणी विवाह, सुदामा चरित्र,परीक्षित मोक्ष, गीता प्रवचन, तुलसी वर्षा हवन एवं 20 नवंबर को शोभायात्रा के साथ समापन किया जाएगा। आचार्य जी ने समस्त मोहल्ला वासियों से निवेदन किया है कि अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का आनंद लेने को कहा है।

पिथौरा मे प्रगतिशील छ ग सतनामी समाज का बैठक सम्पन्न

पिथौरा (समय दर्शन)। प्रगतिशील छत्तीसगढ़ सतनामी समाज के प्रदेश संरक्षक वानोद भारती व प्रदेशाध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद भतपहरी के मार्गदर्शन मे जन-जागरूकता,और सामाजिक गतिविधियों को क्रियाशील करने के लिए महिला प्रकोष्ठ के प्रदेश टीम अध्यक्ष सुश्री अंजली बरमाल व सलाहकार श्रीमती चंपादेवी गेंदले तथा राजमहंत पी एल कोसरिया के सार्थक प्रयास से जिला व ब्लाक मुख्यालय में जाकर लोगों को जागरूक करने की भाव से

पिथौरा रेस्ट हाउस में बैठक आयोजित किया गया।

इस दौरान संगठन के सामाजिक गतिविधियों से अवगत होकर ,समाज प्रमुखों से विस्तृत चर्चा परिचर्चा किया गया।

बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में संस्था के प्रदेशाध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद भतपहरी , प्रदेश संरक्षक विनोद भारती , प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती गिरिजा पाटले , प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती द्रौपदी जोशी,महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष सुश्री अंजली बरमाल , सलाहकार श्रीमती चंपादेवी गेंदले , महासचिव श्रीमती सुशीला सोनवानी, प्रदेश महासचिव एस आर बंजारे,प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य पी एल कोसरिया , प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मती नुतन कुर्रे , पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष रंजीत कोसरिया, ब्लाक अध्यक्ष पिथौरा तरूवर कोसरिया एवं जिला,ब्लाक अठगवां कमेटी के प्रमुख पदाधिकारियों ने उपस्थित होकर अपने विचार रखे ।

बैठक मे विनोद भारती ने बलौदा बाजार घटना को लेकर प्रदेश भर से आ रही प्रगतिशील

संगठन के प्रति क्या-क्या सकारात्मक कदम उठायें जा रहे हैं उन प्रतिक्रियाओं पर विस्तार से अब तक संगठन द्वारा किए गए प्रयासों से अवगत कराया।

प्रगतिशील संगठन के रचनात्मक कदम से जेल में निरुद्ध लोगों का रिहाई करवाने लगातार प्रयास कर रहे हैं ।

उन्होंने बताया कि, हमारे प्रयासों व सरकार की पहल से निकट भविष्य में रिहाई सम्बन्धी सकारात्मक परिणाम देखने को मिल सकता है ।

प्रदेशाध्यक्ष भतपहरी ने मंच के माध्यम से सतनामी समाज को संगठित होकर सभी समाजिक संगठनों को मिलकर सभी समाजिक गतिविधियों को करने एवं प्रदेश के युवाओं,और महिलाओं को सक्रिय भूमिका निभाने आगे आने का आह्वान किया। प्रदेश महासचिव एस आर बंजारे एवं पदाधिकारियों ने सम्बोधित किया। राजमहंत पी एल कोसरिया जी ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, के साथ शहर से ग्राम तक के लोगों को संस्कार परोसने व समय समय पर आवश्यक प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर जागरूकता लाने प्रेरित करते हुए समाज के पदाधिकारीगणो, अधिकारी, कर्मचारी बंधुओं से आग्रह किया कि, शासन की महत्वाकांक्षी योजनाओ से वंचित समाज के लोगों को उसका लाभ दिलाने अपील किया।

इस अवसर पर खचशिल गेण्ड्रे ,तरूवर कोसरिया, सत्यप्रकाश जोशी, चिंता साय बागबाहरा, संजय कोसरिया, राजेश रात्रे मुकेश मधुकर , धरम सिंह बर्मन, आनंद ब्यवहार हाथीगढ़, श्रीमती सुलोचनी कोसरिया, श्रीमती सुमन कोसरिया, अनिता प्रेमी,अजित कुमार प्रभाकर , कमलसिंह रात्रे,भोगराम बर्मन, महेंद्र कुमार रात्रे,धनाऊ मार्कण्डेय छिबर्रा, छबि कोसरिया भंडारी, लाभोदास भंडारी,अशोक प्रभाकर, संतलाल निराला एवं अनेक अधिकारी कर्मचारी सामजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

स्वामित्वधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक रोहित खड़तकर द्वारा समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स ग्राम छाटा, पोस्ट देवादा, तहसील पाटन, जिला दुर्ग (छ.ग.), पिन-491111 से मुद्रित कर 65/1920, परशुराम नगर प्रोफेसर कालोनी, रायपुर (छ.ग.) पिन- 492001 से प्रकाशित। संपादक :- दामोदर राव, फोन नं.-0771-4218364, मो. 9303404360, ईमेल- samaydarshanraipur@gmail.com, RNI: CHHHIN/2018/76878, डाक पंजीयन /रायपुर संभाग/63/2022-24